ऑनलाइन मासिक बाल पत्रिका

पायस

जनवरी, 2021, प्रवेशांक

- नया साल नई सुबह
- गणतंत्र दिवस
- फसलों की कहानी
- गांधी स्मृति
- बचपन को बनाया यादगार

सुभाष चंद्र बोस :
तुम मुझे खून दो,
मैं तुम्हें आजादी...

ऑनलाइन मासिक बाल पत्रिका

पायस

प्रवेशांक

जनवरी 2021

वर्ष : 1, अंक : 1

इस अंक की रचनाएं

कहानियां

समीर गांगुली : नया साल नई सुबह 4, **देवेंद्र कुमार** : खुल गए ताले 8, **क्षमा शर्मा** : करौंदे ले गया कौन 14, **पंकज चतुर्वेदी** : कजली की बखरी 18, **संजीव जायसवाल 'संजय'** : बादल रोने लगा 26, **डॉ. विमला भंडारी** : भूखे भेड़िए 30, **रावेंद्रकुमार रवि** : मजे टिम्मू के 38, **मनोहर चमोली 'मनु'** : भूत था क्या 42, **कल्पना कुलश्रेष्ठ** : ऑपरेशन वाइरस 44,

कविताएं

दिविक रमेश : मेरी सर्दी मेरा गीत 21, **संतोष कुमार सिंह** : चौबेलाल 22, **डॉ. अनुपमा गुप्ता** : पायस बनाएं 22, **डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'** : भैया जी 23, **शादाब आलम** : खराश 23, **राम करन**: बिल्ली बाई 24, **शिव मोहन यादव** : एकता 24

जानकारी

अनिल जायसवाल : गणतंत्र दिवस 6, **देवेंद्र मेवाड़ी**: फसलों की कहानी 10, सुभाष चंद्र बोस 25, गांधी स्मृति 28, जो बाइडन : अमेरिका के नए राष्ट्रपति 32, कमला हैरिस : अमेरिका की पहली अश्वेत उपराष्ट्रपति 33, **विवेक शुक्ला** : विराट कोहली : बचपन से बुलंदियों तक 34, **आइवर यूशिएल** : जीव-जंतुओं का अद्भुत संसार 37

विविध

खेल : शतरंज 13
बचपन को बनाया यादगार 16
हंसना जरूरी है 40
कार्टून कोना 41
जरा सोचो 48-49
खाना और पकाना 57, पुस्तक परिचय 58,
धन्यवाद ज्ञापन 61, अपील 62

बाल मंच

(चित्र) : **अपेक्षा जायसवाल, रुद्रांश, लक्ष्य, स्वर्ण सूर्यांश, अनिकेत विश्वकर्मा, आरोही मिश्रा, अनुभव चमोली, श्रावणी जोशी, वैष्णवी पांडे** 50-52
(खास प्रतिभा) : **स्पन्दन सेठी** : लॉकडाउन में बना यूट्यूबर 53
(आत्मकथ्य) : **मृगांक चमोली** 54
(कविता) : **नियति चित्रांश** : गणतंत्र दिवस 53, **रुषिता वेदुला** : तुम ना मुझे बर्बाद करो 54, **सत्या श्रीवास्तव** : ओ कोरोना, बस करो ना 55
(कहानी) : **मधुनिशा घोष** : छोटी जादूगरनी 55, **यश** : खुशियों की चाबी 56

करें नई शुरुआत

कहते हैं, इस दुनिया में कुछ भी व्यर्थ नहीं होता। अगर लोगों से पूछो, तो अधिकांश लोग साल 2020 को अपनी जिंदगी से मिटा देना चाहेंगे। पर यादों को न मिटाया जा सकता है, न भुलाया जा सकता है। इसलिए अच्छा है कि बुरी और कड़वी यादों से सीख लेकर भविष्य की ओर कदम बढ़ाया जाए।

साल 2020 ने बहुत से परिवार के साथ बहुत बुरा किया, पर बहुत सी नई बातें भी सिखा गया। लॉकडाउन एकल परिवार को संयुक्त परिवार के फायदे याद दिला गया। लोगों को सही मायनो में परिवार की तरह रहना और एक-दूसरे का केयर करना सिखाया। घर-परिवार और गांव छोड़ चुके लोगों को संकट के समय परिवार और गांव की याद आई। करोड़ों लोग अपने गांव, घर लौट आए, यह अपनी जड़ों की ओर लौटना था। उन्होंने जिंदगी में नई शुरुआत की।

बच्चे भी इस साल को अपने हिसाब से याद करेंगे। इस कोरोना ने तुम्हें खेल के मैदान, स्कूल, वहां के दोस्त और शरारतों से दूर कर दिया। पर ऑनलाइन पढ़ाई के बहाने इंटरनेट के नए रूप और नई टेक्नोलॉजी से तुम्हारा परिचय हुआ। बच्चे किताबों की ओर लौटे। इंटरनेट पर उपलब्ध किताबों ने तुम सबको बोर दिनों में भी व्यस्त रखा।

नए साल में तुम भी नई शुरुआत करो। कोई प्रण लेकर खुद पर दबाव मत डालो। बस खुद से इतना वादा करो कि नए साल में तुम जो भी करोगे, मन से करोगे और वह कार्य करने से पहले यह जरूर सोचोगे कि तुम्हारा उस कार्य का तुम पर, तुम्हारे परिवार और समाज पर क्या असर पड़ेगा? फिर देखो, तुम गलत कार्य कर ही नहीं पाओगे। कुछ दिन ऐसा करके देखो, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। न तुम्हें कभी झूठ बोलने की आवश्यकता पड़ेगी, न किसी से लड़ाई होगी।

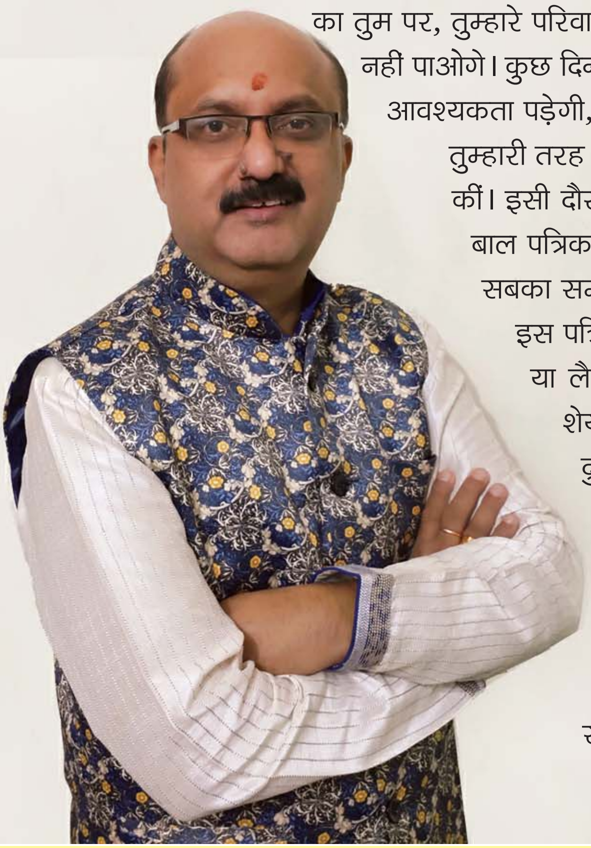

तुम्हारी तरह मैंने भी लॉकडाउन में इंटरनेट पर खूब पढ़ाई की। लोगों और बच्चों से बातें कीं। इसी दौरान विचार आया कि क्यों न छपी हुई पत्रिका की तरह ही एक आनलाइन बाल पत्रिका निकाली जाए, जो किसी भी मायने में प्रिंटेड पत्रिका से कम न हो। तुम सबका समर्थन मिला और आज यह पत्रिका तुम्हारे सामने है।

इस पत्रिका को तुम डाउनलोड कर लो। जब समय मिले, इसे मोबाइल, कंप्यूटर या लैपटॉप या किसी उपलब्ध साधन पर पढ़ो। अपने दोस्तों से इसकी फाइल शेयर करो। इसमें तुम खूब लिख सकते हो और अपने अंदर के टैलेंट को दुनिया के सामने ला सकते हो। तुम अपनी राय हम तक व्हाट्सएप या ईमेल से जरूर पहुंचाना, ताकि पत्रिका को तुम्हारे मन माफिक बनाया जा सके।

और अंत में, नए साल में तुम्हारे स्कूल की वार्षिक परीक्षा ऑनलाइन न होकर स्कूल में ही आयोजित हो सकती है। अतः अब गंभीरता से पढ़ाई में जुट जाओ।

तो आओ, मिलकर नए साल में नई शुरुआत करते हैं। नया साल तुम सबके लिए सफलता के नए द्वार खोले, यही कामना है।

तुम्हारा

अनिल जायसवाल

ऑनलाइन मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- व्हाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

नया साल नई सुबह

उस दिन भी पहले पूरब दिशा लाल हुई और फिर नए साल का सूरज उग आया। काफी देर बाद जब सर्दी काफी कम हो गई, तो मोटा मेढक टर्र अपने गर्म घर को छोड़कर बाहर निकल आया। वह नए साल की नई सुबह का नाश्ता किसी मोटे-ताजे कीड़े को मारकर करना चाहता था।

सुनहरे मुर्गे ने मोटे मेढक को देखा, तो उसकी लार टपक आई। "वाह, नए साल की सुबह इतनी सुंदर!" वह दबे पांव मेढक की ओर बढ़ने लगा।

इधर म्याऊं बिल्ली निकली थी आग की खोज में! मारे जाड़े के उसके सातों बच्चे अपनी खानदानी आवाज भूलकर चूहों की तरह 'कूं-कूं' किए जा रहे थे। सुनहरे मुर्गे को देखते ही वह झपटने का मौका तलाशने लगी। म्याऊं को पूरा यकीन था कि मुर्गे का गर्म गोश्त उसके बच्चों की हड्डियों में जमी सर्दी को दूर कर देगा। अतः वह मुर्गे के पीछे हो ली।

खूंखार हरी आंखों वाले भेड़िए

चित्र : जय खोहवाल

ने पहले मुर्गे और उसके पीछे मुलायम खाल वाली बिल्ली को अपनी ओर आता देखा, तो अपने को पेड़ के पीछे पूरी तरह छिपा लिया। फिर वह भी उनके पीछे हो लिया। उसके चेहरे पर कुटिल मुसकान थी, चलते-चलते वह मन ही मन बोला, 'वाह, नया साल।'

भेड़िए की पुरानी दुश्मनी थी चितकबरे चीते से। चीते ने काफी पहले से ही सोच रखा था कि भेड़िए को नए साल के पहले दिन ही इस दुनिया से विदा करना है। अतः भेड़िए को देखकर वह भी दबे पांव उसकी ओर बढ़ने लगा।

इस तरह एक-दूसरे की जान के प्यासे चारों जीव प्रतिपल एक दूसरे के नजदीक पहुंचते जा रहे थे। उनके बीच का फासला लगातार कम होता जा रहा था। होते-होते वह समय भी आ पहुंचा, जब मेढक और मुर्गे के बीच दो कदम, मुर्गे और बिल्ली के बीच चार कदम, बिल्ली और भेड़िए के बीच सात कदम तथा भेड़िए और चीते के बीच सिर्फ आठ कदम का फासला रह गया। यानी सब एक दूसरे पर अब झपटे, तब झपटे।

अब जैसे ही चीते ने लपककर भेड़िए को दबोचना चाहा कि तभी एक भयानक दहाड़ ने आसपास का माहौल कंपा डाला।

मस्त मेढक टर्र ने घबराकर पीछे देखा, तो मौत का अवतार मुर्गा सामने था। मुर्गा पीछे मुड़ा, तो बिल्ली का भयानक चेहरा देख उसके पसीने छूटने लगे। बिल्ली ने पीछे देखा, तो सामने लार टपकाता भेड़िया था।

भेड़िए की तो पीछे मुड़ते ही चीख निकल गई, "अरे बाबा, यह तो मेरा निर्दयी शत्रु चीता है।"

...और चीता भी पीछे देखते ही सहम गया। वनराज सिंह स्वयं उपस्थित थे। उसे मौत गज भर के फासले पर खड़ी दिखाई देने लगी।

लेकिन यह क्या? वनराज उसकी ओर देखकर मुसकरा रहे थे। चीते को घबराया पाकर वह उसके कंधे

अपने लेखक को जानिए

समीर गांगुली : हिंदी बाल साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले समीर गांगुली की कहानियां तकरीबन हर प्रतिष्ठित बाल पत्रिका में स्थान पाती रही हैं। दो दशक तक सार्वजनिक क्षेत्र की एक बीमा कंपनी में नौकरी के बाद अब पूरी तरह से हिंदी विज्ञापन लेखन का कार्य करते हैं।

को थपथपाकर बोले, "नया साल मुबारक हो दोस्त।"

'नया साल वनराज की तरफ से मुबारक!' चीते की आंखें खुली के खुली रह गईं।

वनराज चले गए। यह वक्त तो, उनके शिकार का था, पर शिकार करके वह किसी को भी नए साल की नई सुबह से वंचित करना नहीं चाहते थे।

चितकबरे चीते ने भी एक ही पल में नया निर्णय ले लिया। घबराए भेड़िए के पास जाकर वह बोला, "कल तक जो कुछ था, उसे भूल जाओ। आज से तुम हमारे दोस्त हो। नया साल मुबारक हो।"

भेड़िए ने भी अपनी हरी आंखों में भरसक दया-भाव लाते हुए बिल्ली म्याऊं को नए साल की शुभकामनाएं दीं।

म्याऊं ने मुसकराकर सुनहरे मुर्गे को नए वर्ष की बधाई दी। अपने जान की खैर देख मुर्गे का भी हृदय परिवर्तन हुआ। वह मेढक के पास जाकर बोला, "जियो और जीने दो टर्र भाई, मुबारक हो नया साल।"

जब सुनहरे मुर्गे सहित सब अपनी-अपनी राह लौट गए, तो मेढक टर्र की जान में जान आई और भगवान को शुक्रिया अदा कर वह तेजी से तालाब की ओर बढ़ा, सभी जीवों को नए साल की शुभकामनाएं देने।

गणतंत्र दिवस

अनिल जायसवाल

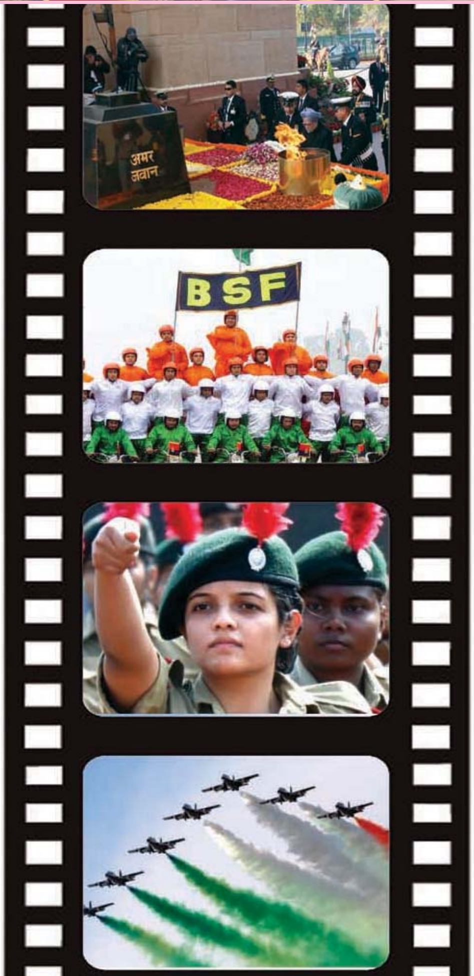

जानते हो, हर साल 26 जनवरी का दिन दिल्ली क्या, पूरे भारत के लोगों के लिए किसी मेले से कम नहीं होता। लोगों का रेला उस स्थान की ओर पैदल कूच करता है, जहां मनाया जा रहा होता है गणतंत्र दिवस।

दिल्ली में तो यह और भी खास हो जाता है क्योंकि भारतीय गणतंत्र को चलाने वाली सरकार का मुख्यालय दिल्ली में ही है। इसलिए राजधानी दिल्ली में बड़े भव्य स्तर पर गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। दिल्ली के विजय चौक से राजपथ होते हुए इंडिया गेट तक सड़क के दोनों ओर बड़े-बूढ़े, युवा, बच्चे सभी सूर्योदय के पहले से ही सर्दी की ठिठुरन के बीच अपनी सीट पर आकर बैठने लगते हैं। जिन्हें सीट नहीं मिलती, वे खड़े होकर यह आयोजन देखते हैं। करीब तीन घंटे के इस समारोह के बहाने दुनिया भारत के सैन्य पराक्रम और भविष्य की तैयारियों की एक झलक देखती है।

ऐसे होती है शुरुआत

प्रधानमंत्री इंडिया गेट के अमर जवान ज्योति पर पहुंचकर देश के लिए बलिदान हुए भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि देते हैं ।

इस परेड में दिल्ली के स्कूलों के बच्चे भी परेड करते हैं। भारत के अधिकांश राज्य और केंद्र शासित प्रदेश झांकियां पेश करते हैं और अंत में जब भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान हवाई करतब दिखलाते हैं, तो लोग दिल थामे रह जाते हैं।

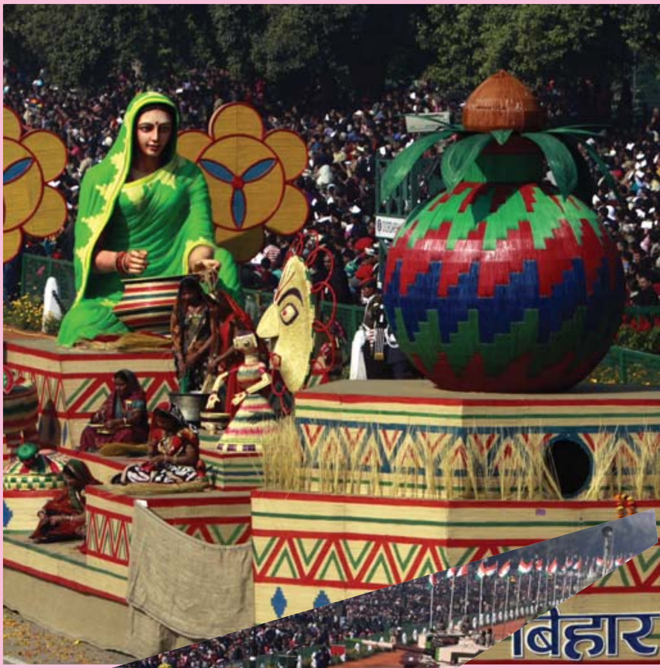

यह दिन ही क्यों चुना

15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ, तो पहले ‘इंडिया इंडिपेंडेंस एक्ट 1947’ के द्वारा भारत का शासन चला। फिर भारतीय संविधान बनाने का काम 28 अगस्त 1947 को डॉ. भीमराव अंबेडकर की देखरेख में शुरू हुआ और यह लागू हुआ 26 जनवरी 1950 को। इस दिन को इसलिए भी चुना गया क्योंकि देश की गुलामी के दौरान 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वराज का नारा दिया गया था।

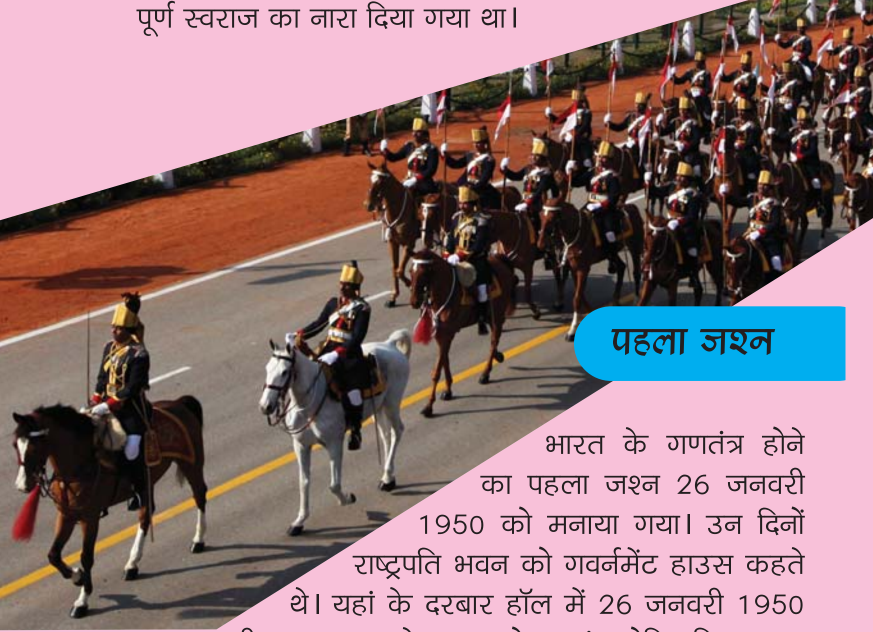

पहला जश्न

भारत के गणतंत्र होने का पहला जश्न 26 जनवरी 1950 को मनाया गया। उन दिनों राष्ट्रपति भवन को गवर्नमेंट हाउस कहते थे। यहां के दरबार हॉल में 26 जनवरी 1950 की सुबह दस बजे भारत को गणतंत्र घोषित किया गया और डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद भारत के पहले राष्ट्रपति बने।

इसके बाद सभी लोग इंडिया गेट के पास बने इर्विन स्टेडियम पहुंचे, जिसे आज मेजर ध्यानचंद स्टेडियम कहते हैं। इसी स्टेडियम में भारत का पहला गणतंत्र दिवस मनाया गया। पहले चार साल इसका आयोजन नेशनल स्टेडियम के अलावा किंग्सवे, लालकिला और रामलीला ग्राउंड पर हुआ। पहले गणतंत्र दिवस में विदेशी मेहमान के रूप में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो ने हिस्सा लिया था। इस साल ब्रिटेन के प्रधानमंत्री इस समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। ❀

खुल गए ताले

अजय अपने पिता की पुण्यतिथि पर अनाथालय के बच्चों के लिए भोजन लेकर जाता है। इस बार जाते समय उसने बेटे रजत को भी साथ ले लिया।

सर्दियों का मौसम था। अनाथालय के बड़े आंगन में बच्चे भोजन करने लगे। रजत ने देखा, एक कमरे के बाहर लगे बोर्ड पर लिखा था, 'पुस्तकालय'। रजत अंदर चला गया। वहां तालाबंद अलमारियों में बहुत सारी किताबें नजर आ रही थीं। वहां कोई नहीं था। रजत सोच रहा था, 'यह कैसा पुस्तकालय है। किताबें ताले में बंद हैं, उन्हें पढ़ने वाला कोई नहीं!'

घर लौटकर रजत ने अजय को बताया, तो वह बोले, "अनाथालय को सेठ भीमजी चलाते हैं। वह अब बूढ़े हो गए हैं, बीमार रहते हैं। उनका बेटा सब देखता है। पुस्तकों में उसकी कोई रुचि नहीं। बस अनाथालय जैसे-तैसे चल रहा है।"

अजय पत्रकार हैं, बच्चों के लिए लिखते हैं। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। रजत ने कहा, "अनाथालय के बच्चे अगर किताबें पढ़ना चाहें, तो क्या करें?"

"बच्चे अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकते, उनका जीवन बहुत कठिन है। तुम्हारी बात ठीक है। बच्चे कहीं भी हों, पुस्तकें और उनके बीच दूरी नहीं होनी चाहिए।"

"इस बारे में आपको कुछ करना चाहिए।" रजत बोला।

हाल ही में अजय की पुस्तक प्रकाशित हुई है। शीर्षक है 'बच्चों की अपनी कहानियां'। उन्होंने कुछ सोचा, फिर फोन पर समय लेकर भीमजी से मिलने चले गए।

भीमजी उनसे आदर और स्नेह से मिले। वह पुस्तक प्रेमी हैं। अजय ने उन्हें अपनी नई पुस्तक भेंट की। भीमजी ने पुस्तक को माथे से लगाया। बोले, "मैंने आपकी कई किताबें पढ़ी हैं। इसे जरूर पढ़ूंगा।"

अजय को अपनी बात कहने का अवसर मिल गया। बोले, "मैं चाहता हूं कि इसे तथा ऐसी ही दूसरी किताबों को बच्चे पढ़ें, जैसे अनाथालय में रहने वाले बच्चे। क्या बच्चों की मनपसंद पुस्तकों को आपके पुस्तकालय में स्थान मिल सकता है?"

भीमजी सिर झुकाकर सोचने लगे। फिर बोले, "वहां तो हजारों पुरानी किताबें हैं। कभी मैंने उन्हें बहुत चाव से खरीदा था। अब तो सब अलमारियों में बंद हैं। नई पुस्तकों के लिए जगह ही कहां है?"

अजय ने कहा, "आपके पुस्तकालय में दुर्लभ पुस्तकों का भंडार है। ताले में बंद रहकर वे नष्ट हो जाएंगी। उन्हें किसी बड़े पुस्तकालय में होना चाहिए, जिससे पाठक उनका लाभ उठा सकें।"

"हां, यह तो हो सकता है। पता नहीं, यह बात अब तक मेरे दिमाग में क्यों नहीं आई? तुम देख रहे हो, इस उम्र और बीमारी के कारण मैं ज्यादा कुछ नहीं कर सकता।"

अजय ने कहा, "अगर आप अनुमति दें, तो मैं और मेरे मित्र इसे कर सकते हैं। वह बच्चों की लाइब्रेरी चलाते हैं। हम मिलकर पुरानी पुस्तकों को छांटकर सही पुस्तकालयों में रखवा देंगे। इस तरह नई किताबों के लिए काफी जगह निकल सकती है।"

"यह तो बहुत अच्छा रहेगा।" भीमजी ने उत्साहित स्वर में कहा, "तुम अपने दोस्त के साथ मिलकर पुरानी पुस्तकों की व्यवस्था करवा दो। फिर मैं वहां की मरम्मत और रंग रोगन करवा दूंगा। इसके बाद...।"

अजय ने कहा, "इसके बाद आपको कुछ नहीं करना होगा। मैं और मेरे मित्र सारी व्यवस्था कर लेंगे।"

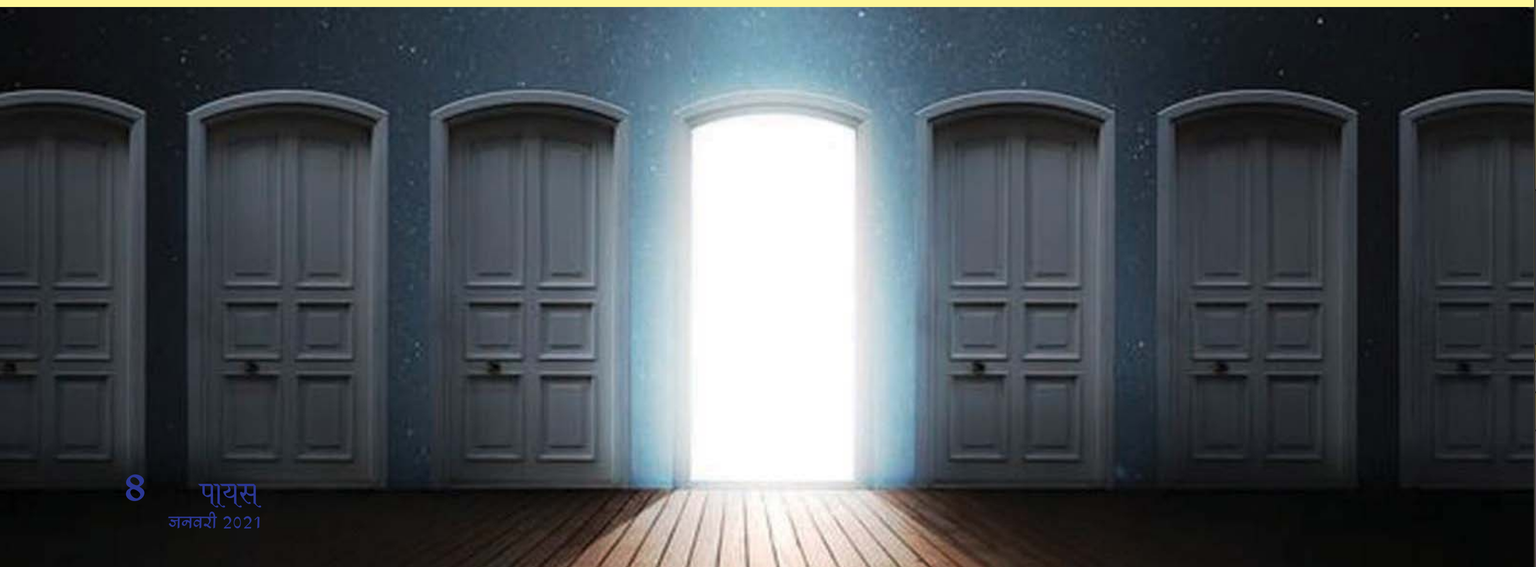

अपने लेखक को जानिए

देवेंद्र कुमार : बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका नंदन में सहायक संपादक रहे। बच्चों के लिए कहानियां अपने आसपास के परिवेश से उठाते हैं। कहानीकार तो अच्छे हैं ही, कविताएं भी लिखते हैं। अन्य भाषाओं से कहानियों को हिंदी में प्रस्तुत करने में महारत। हजारों विदेशी कहानियों से बच्चों को परिचित करवाया।

अजय ने लौटकर रजत को यह ख़ुशख़बरी दी और फिर अपने मित्र विमल से मिलने चले गए। विमल अपने घर में बच्चों की लाइब्रेरी चलाते थे, पर वहां ज्यादा पुस्तकों के लिए जगह नहीं थी। अजय की योजना सुनकर विमल ख़ुशी से जैसे उछल पड़े। वह पेशे से अध्यापक थे। बच्चों के लिए कितना कुछ करना चाहते थे।

अजय की मित्रमंडली में उन जैसे कई पत्रकार-लेखक थे। एक दिन सब मिले और बच्चों के पुस्तकालय की योजना पर काफी देर तक चर्चा हुई। नगर की बड़ी लाइब्रेरी वालों से बात की, तो पुस्तकों की सूची बनाने का काम उन्होंने संभाल लिया। पुरानी पुस्तकें गोदाम में रखवा दी गईं और उनकी सूची बनाने का काम शुरू हो गया। भीमजी ने कमरे की मरम्मत करवा दी।

विमल अपनी लाइब्रेरी को वहां ले आए। सब मित्रों ने सहयोग करके पुस्तकों के लिए नए शेल्फ खरीद लिए। सबने अपने संग्रह से बच्चों की पुस्तकें लेकर शेल्फों में लगा दीं। कई प्रकाशकों ने भी लाइब्रेरी के लिए बच्चों की पुस्तकें सहर्ष दे दीं। बाल पाठकों के लिए नई मेज कुर्सियां लग गईं। पुरानी लाइब्रेरी का कायाकल्प हो गया। शेल्फों में सजी बच्चों की पुस्तकें बहुत सुंदर लग रही थीं।

अब नई लाइब्रेरी के उद्घाटन की बारी थी। भीमजी से कहा गया, तो वह सहर्ष तैयार हो गए। एक दिन पहले अजय भीमजी से मिलने गए। अजय ने कहा, "क्या अनाथालय के बच्चे वहां बैठकर अपनी मन पसंद किताबें पढ़ सकेंगे?"

भीमजी ने हंसकर कहा, "हां, क्यों नहीं। बच्चों को किताबों से भला कैसे दूर रखा जा सकता है।"

और फिर आया बाल पुस्तकालय के उद्घाटन का दिन। पुस्तकालय के बाहर वाला विशाल चौक पूरी तरह भरा हुआ था। भीमजी अपने पूरे परिवार के साथ आए थे। सबसे ज्यादा उत्साहित थे, अनाथालय में रहने वाले बच्चे। उन्हें तो इसकी कल्पना ही नहीं थी। ❁

चित्र : सुशील दोषी

फसलों की कहानी

अच्छा दोस्तो, एक बात बताओ। क्या खाना खाते समय तुमने कभी सोचा कि भोजन का जो कौर तुम मुंह में ले रहे हो, वह कहां से आता है? रोटी हो या दाल-भात, या तुम्हारा बर्गर-पिज्जा, यह आखिर आया कहां से?

भोजन का कौर हमें फसलों से मिलता है और फसलों की बहुत लंबी कहानी है। सुनोगे? हां, तो सुनो।

आज जो हमारी फसलें हैं, वे सभी हजारों वर्ष पहले जंगलों में घास और पेड़-पौधों की तरह उगती थीं। तुम्हें पता है ना कि हमारे पूर्वज पहले गुफाओं में रहते थे और कंद-मूल तथा फल खोजकर खाते थे, या फिर आखेट करते थे।

कहते हैं, एक बार ऐसा हुआ कि हमारे किसी पुरखे को जंगल में किसी जंगली घास की सूखी बालियां मिलीं। उसने उन बालियों को हथेलियों में मसला, तो उनके दाने निकल आए। उसने वे दाने चखे, तो उसे वे स्वादिष्ट लगे। वह कुछ दाने अपनी गुफा में ले आया। उसने अपनी पत्नी और बच्चों को भी वे दाने चखाए। हर मां कठिन समय के लिए कुछ बचा लेती है। उस मां ने भी कुछ दाने संभालकर रख लिए। खाते-खेलते कुछ दाने गुफा के आसपास छिटक गए। बारिश हुई, धरती भीगी और वे बीज अंकुरित हो गए। वे बड़े हुए, पौधे बने और उनमें बालियां निकल आईं। बालियां पकीं, तो उनमें भी वैसे ही दाने या बीज बन गए, जैसे हमारा वह पूर्वज लाए थे। वह और उसकी पत्नी देखकर खुश हुए कि उन बीजों को उगाया भी जा सकता है।

तो, दोस्तो इस तरह खेती शुरू हो गई। उन बालियों के बीज

पहली फसल बन गए। आज कृषि वैज्ञानिक कहते हैं कि हमें अनाज की फसलें इसी तरह मिलीं। गेहूं हमारी सबसे पुरानी अनाज की फसल है। इसका जन्म कभी मध्य-पूर्व में दजला और फरात नदियों के आसपास के इलाके मैसापोटामिया में हुआ था। और हां, इसी बीच हमारे उन पूर्वजों ने जंगलों से जानवरों के शावक पकड़कर उन्हें पालतू बनाया। इस तरह पशुपालन भी शुरू हो गया।

अब सुनो, उसके बाद क्या हुआ? उसके बाद अच्छी खेती करने के लिए हमारे पूर्वज नदी-घाटियों के आसपास चले गए। वहां नदी तटों की उपजाऊ जमीन में फसल खूब लहलहाई। उन्होंने खेत बनाए और लकड़ी, पत्थर या जानवरों के सींग से बीजों की बुआई करने लगे। उन्होंने जंगली पौधों को पालतू बनाकर कई और फसलें तैयार कर लीं। वे उनकी भी खेती करने लगे। अपने खेतों के आसपास रहने के लिए उन्होंने कच्चे घर बना लिए। परिवार के लोग साथ रहने लगे। खेती बढ़ी और इस तरह धीरे-धीरे गांव और कस्बे बन गए। फिर शहर और महानगर बने।

दोस्तो, इस तरह नदी-घाटियों में मानव सभ्यताएं पनपीं। सिंधु घाटी की सभ्यता एक प्राचीन सभ्यता थी। वहां के निवासी गेहूं, जौ, कपास, तिल, उड़द, मटर और मसूर की खेती करते थे। उन्होंने हाथी, घोड़े, गाय-बैल, भेड़, बकरियां और मुर्गियां पालीं। मुअन-जो-दाड़ो और हड़प्पा में भव्य नगर बसाए। उन नगरों में अनाज के बहुत बड़े भंडार बनाए। फसलों की काफी उपज वे इन भंडारों में रखने लगे। उन्होंने बैलगाड़ियां भी बनाईं, जिनमें अनाज लाते-ले जाते थे। फसलों की सिंचाई के लिए उन्होंने बांध और नहरें भी बनाईं।

आज से करीब 4,500 से 3,400 वर्ष पहले वैदिक युग में भी आर्य फसलों की खेती करते थे। उनसे मिलने वाले अन्न को वे पवित्र और अन्न देवता मानते लगे। उस काल में वे गोधूम यानी गेहूं, यव अर्थात जौ, उड़द और तिल आदि फसलें उगाते थे। धीरे-धीरे खेती का प्रचलन बढ़ता गया। कहीं गेहूं लहलहाता, तो कहीं धान की फसल झूम उठती। कहीं ज्वार, बाजरा की फसलें उगाई जातीं, तो कहीं गन्ना अपनी मिठास बिखेरता।

नील नदी की घाटी में हजारों वर्ष पहले से वहां के निवासी गेहूं, कपास, मटर और चुकंदर की फसलें उगाने लगे। उन्होंने अंजीर और खजूर के बाग भी लगाए। इस तरह नील नदी की घाटी में भी फसलें लहलहा उठीं और वहां मिस्र की महान सभ्यता पनपी। दजला-फरात नदियों की विशाल घाटी के इलाके मैसोपोटामिया में तीन सभ्यताएं पनपी-सुमेरियाई सभ्यता, बेबीलोनी

अपने लेखक को जानिए

देवेंद्र मेवाड़ी : बच्चों के 'देबू दा'। सरल, सरस भाषा में विज्ञान बच्चों और लोगों तक पहुंचाने में माहिर। पूसा इंस्टिट्यूट, पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय और पंजाब नैशनल बैंक में काम किया। हिंदी भाषी प्रांतों में घूमकर हजारों बच्चों को विज्ञान की कहानियां सुना चुके हैं। दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित।

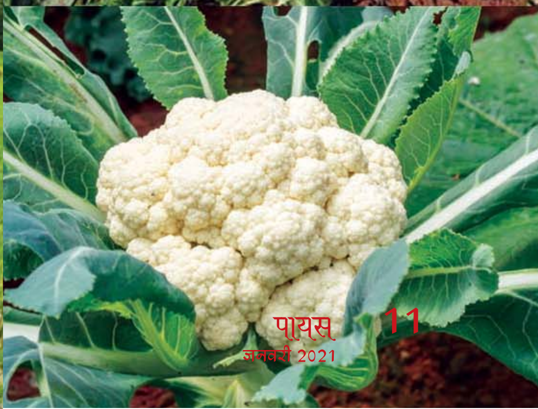

सभ्यता और असीरियाई सभ्यता। वहां के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि ही था।

और, जानते हो, मक्का कहां से आई? सुदूर दक्षिण अमेरिका से। वहां इंका, एज्टेक और मय सभ्यताएं पनपीं। मक्का उनकी मुख्य फसल थी। वे लगभग 8,000 वर्ष पहले से मक्का की खेती कर रहे थे। मक्का के साथ ही वे कपास, आलू, कोको, सेम, चौलाई, किनवा (बथुवा), मिर्च और टमाटर उगाते थे। एज्टेक सभ्यता के लोग एंडीज पर्वतमाला में आलू की खेती करते थे।

दोस्तो, एक बात याद रखना। ये सभी फसलें हमें यों ही नहीं मिल गईं। इनको पाने के लिए हमारे पूर्वजों ने बहुत कष्ट उठाए। उन्होंने न जाने कितनी घासों और पेड़-पौधों को चखा। उनमें से कई पौधे कड़वे और कसैले मिले होंगे। कई पौधों से नशा हुआ होगा और विषैले पौधों से उनकी जान चली गई होगी। लेकिन, चखते-चखाते उन्होंने असंख्य जंगली पौधों में से काम की फसलें चुन लीं। इस काम में हजारों वर्ष लगे।

एक बात और। हमारे पूर्वजों ने देखा होगा कि जो फसलें उन्होंने चुनी, वे कुछ खास मौसमों में ही उगती हैं। कुछ फसलें वर्षा ऋतु में उगती हैं, कुछ जाड़ों में और कुछ ज़ायद ऋतु में। वर्षा ऋतु की फसलों के मौसम को उन्होंने खरीफ ऋतु कहा। जाड़ों के मौसम को रबी और वसंत से ग्रीष्म के बीच का समय ज़ायद ऋतु कहलाया। खरीफ ऋतु मई-जून से शुरू होती है। इस मौसम में धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, मडुंवा (रागी), कपास, सोयाबीन, अरहर, गन्ना और मूंग, उड़द तथा लोबिया की फसलें उगाई जाती हैं। इन फसलों की कटाई के बाद अक्टूबर-नवंबर में रबी की फसलें बोई जाती हैं जैसे- गेहूं, जौ, सरसों, आलू, चना, तिल और मटर। फरवरी-मार्च से मई तक ज़ायद की ऋतु में अरहर, मूंग, उड़द और जल्दी तैयार होने वाली मक्का भी बोई जाती है। इसी ऋतु में खीरा, कद्दू, लौकी, करेला, तरबूज और खरबूज भी उगते हैं।

फसल चक्र

दोस्तो, फसलों का इतिहास तो मानव इतिहास से जुड़ा हुआ है। हमने अनाज के लिए फसलें उगाईं। अनाज के लिए ही कई भयंकर लड़ाईयां भी लड़ीं। कई साम्राज्य फसलों के कारण फले-फूले और कई इनके अकाल के कारण समाप्त हो गए। जहां-जहां मनुष्य गया, फसलें साथ ले गया। इसीलिए धान भारत और चीन से जापान होकर पूरी दुनिया में फैल गया। मध्य पूर्व से गेहूं दुनिया भर में पहुंच गया। हमारे देश का गन्ना आज दुनिया भर का मुंह मीठा कर रहा है। दक्षिण अमेरिका से मक्का, आलू, मूंगफली, सेम और टमाटर की फसल दुनिया के अनेक देशों में पहुंच गई है।

इसलिए दोस्तो, आज जब तुम भोजन का कौर मुंह में लो, तो इन तमाम फसलों को जरूर याद करना। इसके साथ ही उन पूर्वजों की स्मृति को भी नमन करना, जिन्होंने हमारे लिए ये फसलें खोजीं। ❁

शतरंज

सोचो, दो सेनाएं आमने-सामने डटी हैं। सेना में हाथी, घोड़े, और ऊंट भी शामिल हैं। पर बेचारा राजा उनकी सवारी नहीं कर सकता। वह अपने मंत्री के साथ खड़ा रहकर तमाशा देखता है। वह कितना भी वीर हो, पर आगे बढ़कर फटाफट वार नहीं कर सकता, सेना का नेतृत्व भी नहीं कर सकता। वह अपने सैनिकों के पीछे छिपता रहता है। और सैनिक! बेचारों को सीधे वार करने की इजाजत नहीं है, उन्हें ठुमक-ठुमककर आड़ा-तिरछा चलना पड़ता है। घोड़ा भी फर्राटा नहीं भरता, ढाई कदम चलकर ठिठक जाता है।

क्या कभी तुमने ऐसी अनोखी सेनाओं को आपस में युद्ध करते देखा है? जानते हो, ऐसी सेनाओं का संचालन करने में अपने विश्वनाथन आनंद बहुत निपुण हैं। उनके संचालन में उनका राजा आमतौर पर शान से जीतता है। अब समझे? हम बात कर रहे हैं शतरंज की।

दुनिया के बहुत-से देशों ने शतरंज पर दावा किया, पर बाद में सभी ने माना कि यह खेल विश्व को भारत की देन है। इसे भारत में चतुरंग कहते थे और इसे सेना खेलती थी। राजा-महाराजा इस खेल का खूब आनंद लेते थे।

आठवीं शताब्दी में जब यह खेल पर्शिया पहुंचा, तो इसे शतरंज नाम मिला। नौवीं शताब्दी में पूरी दुनिया घूमते हुए यह खेल यूरोप पहुंचा। तब इसे गंभीरता से खेलने की कोशिश हुई और कई प्रतियोगिताएं सामने आईं।

यह खेल यूरोप में कितना लोकप्रिय हुआ, इसकी सबसे बड़ी मिसाल तो यही है कि 1497 में स्पेन के चर्च के एक कर्मचारी लुइस रेमिरेड डी लुसेना ने इस खेल को समझाने के लिए किताब लिखी, जिसका नाम था 'रिपीटिशन ऑफ लव एंड द आर्ट ऑफ प्लेइंग चेस'। 1851 में पहली बार शतरंज प्रतियोगिता हुई और इसे जर्मनी के एडोल्फ एंडरसन ने जीता। 1886 में प्राग के विल्हेल्म स्टेनिट्ज जर्मनी के जोहान्नस जुकेरटोर्ट को हराकर शतरंज के पहले विश्व चैंपियन बने।

सन 1924 में वर्ल्ड चेस फेडेरेशन (फीडे) का गठन हुआ। फीडे ने 1948 में पहली बार पुरुषों के लिए विश्व चैंपियनशिप का आयोजन किया। यहां विजेता रहे रूस के मिखाइल बोत्विनिक। आरंभ में इस खेल पर रूस का दबदबा था। पर बाद में भारत ने अपने इस पुश्तैनी खेल में अपनी पकड़ दिखाई।

इस खेल में काले और सफेद कुल 64 खाने होते हैं। दोनों तरफ दो-दो हाथी, घोड़े और ऊंट तथा एक-एक राजा और मंत्री होते हैं। साथ ही दोनों ओर आठ-आठ सैनिक भी होते हैं। अर्थात दोनों तरफ 16-16 मोहरे होते हैं।

यदि तुम चाहो, तो इस खेल को कॅरियर भी बना सकते हो। आज इस खेल में पैसा भी है और नाम भी। इस खेल के हर आयु वर्ग में भारत से चैंपियन खिलाड़ी निकल रहे हैं। हाल ही में भारत विश्व शतरंज ओलम्पियाड में रूस के साथ संयुक्त विजेता बना

करौंदे ले गया कौन

निर्मला के गांव में खेतों के किनारे करौंदे की झाड़ियां लगाई जाती थीं, जिससे कांटे के डर से जानवर खेतों में न घुसें। इनके पत्तों को भी कोई जानवर नहीं खाता था। करौंदे के मौसम में ढेर सारे करौंदे तोड़कर मंडी में बेचे जाते थे। दादी इनसे तरह-तरह की चटनी, अचार और मुरब्बा बनातीं और गांव भर में बांटती थीं।

शादी के बाद निर्मला शहर में आ गई। लेकिन अक्सर करौंदे के मौसम में उनकी याद आती। एक बार गांव गई, तो वहां से छोटा सा पौधा ले आई और घर के कच्चे आंगन में लगा दिया।

वक्त गुजरने के साथ यह नन्हा पौधा अमरूद के पेड़ जितना बड़ा हो गया। करौंदे का झाड़ इतना बड़ा भी हो सकता है, यह देखकर सब आश्चर्य करते। मौसम में सफेद-लाल फूलों जैसे करौंदों से यह लद जाता। जैसे हरे पत्तों के बीच में किसी ने लाल-सफेद मोतियों की झालर लटका दी हो। पेड़ पर इतने करौंदे लगते कि पूरा मोहल्ला आकर तोड़ता, फिर भी खत्म न होते। कई बार लोग ज्यादा करौंदे पाने के चक्कर में, पेड़ की डाल ही तोड़ देते।

एक बार ऐसा ही हुआ, तो निर्मला को बहुत गुस्सा आया। बोली, "भाई, पेड़ के साथ ऐसा बर्ताव क्यों? एक तो उसके फल खा रहे हो, ऊपर से डाल तोड़कर उसे चोट भी पहुंचा रहे हो। यह क्या बात हुई? मैंने इसे बच्चे की तरह पाला है। मेरे बच्चे को कोई चोट पहुंचाए, यह बर्दाश्त नहीं है। करौंदे तोड़ने की कोई मनाही नहीं, मगर डाल तोड़ना मना है।"

करौंदे के पेड़ पर तरह-तरह की चिड़ियां आकर, पके लाल करौंदे का

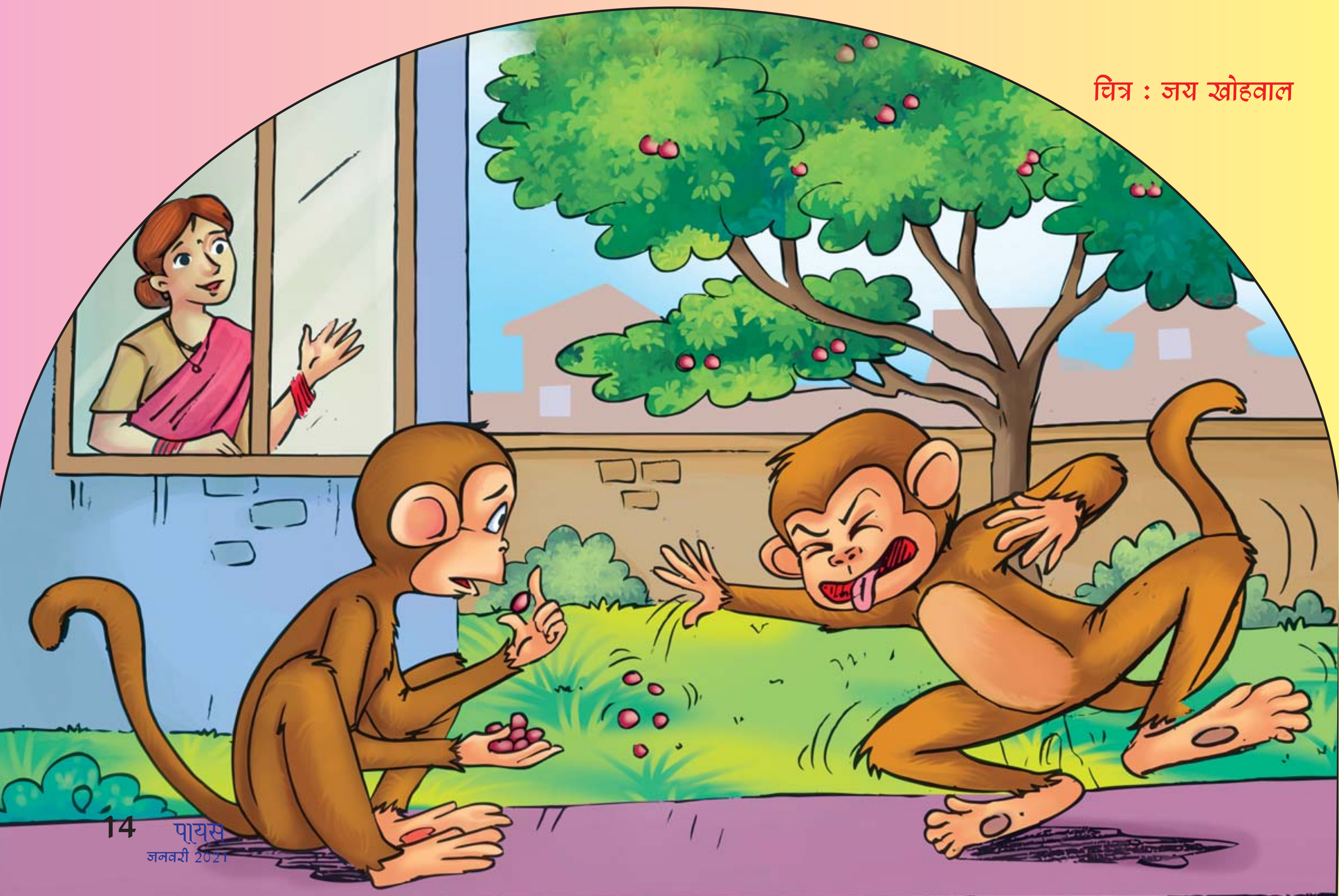

चित्र : जय खोहवाल

स्वाद लेतीं। एक चिड़िया तो इस पर घोंसला भी बनाती। वह नीचे लगे मनीप्लांट के दो पत्तों को सिलती और उसे पेड़ पर लटका देती। 'क्या कारीगरी है।' निर्मला सोचती।

जब करौंदे लाल हो जाते और कुछ मीठे भी, तो कोयल आती। वह करौंदे को चोंच में दबाकर चोंच ऊपर करके उसका रस चूसती।

एक दिन की बात, बंदरों का पूरा कुनबा, करौंदे के पेड़ की तरफ आ पहुंचा। निर्मला को डर लगा कि कहीं वे सब घर के अंदर घुस आए, तो न जाने क्या-क्या तहस-नहस करेंगे। उसने दरवाजा बंद कर लिया और खिड़की से बंदरों को देखने लगी। कई बंदरिया अपने छोटे बच्चों को पेट से चिपकाई थीं। निर्मला का मन किया कि काश एक छोटा बच्चा उसे मिल सकता।

बंदर समझ गए कि कांटों के कारण पेड़ पर चढ़ना तो मुश्किल है। इसलिए वे आंगन की दीवार पर बैठकर ही जोर-जोर से पेड़ की डालियों और तने को हिलाने लगे। इससे ढेर के ढेर करौंदे नीचे आंगन में पत्तियों समेत गिरने लगे। फिर मुट्ठी भर-भरकर उन्होंने इकट्ठे ही उन्हें मुंह में डाल लिया। लेकिन जल्दी ही वे उन्हें इधर-उधर उगलते हुए भागने लगे। इतना खट्टापन उनसे बर्दाश्त नहीं हुआ।

'कम्बख्त कहीं के। करौंदे बेकार कर दिए। सारी दीवार भी गंदी कर दी।' निर्मला ने सोचा। मगर राहत की सांस भी ली। बंदरों का क्या भरोसा , गुस्से में पूरे पेड़ को ही उजाड़ देते।

उनके जाने के थोड़ी देर बाद, निर्मला बाहर निकली। नीचे बिखरे करौंदों को बीनकर टोकरी में रखने लगी। पूरी टोकरी भर गई। दादी की तरह कुछ को काटकर छौंक लेगी। कुछ की चटनी बनाएगी। बाकियों को सुखाकर, पीसकर, खटाई की तरह इस्तेमाल करेगी। उसने स्टूल पर उन्हें रख दिया। और घर के दूसरे कामों में लग गई।

अपने लेखक को जानिए

क्षमा शर्मा : नंदन पत्रिका के संपादन से चार दशकों तक जुड़ी रहीं। बच्चों के साथ बड़ों के लिए भी बहुत लिखा। हिंदी साहित्य की विशिष्ट साहित्यकार। दस कहानी संग्रह, चार उपन्यासों के साथ कई अन्य पुस्तकें प्रकाशित। रोजाना किसी न किसी अखबार में कॉलम लिखती हैं।

अगले दिन, झाड़ू लगाते हुए उसने देखा कि करौंदे कम हो रहे हैं। समझ में नहीं आया कि कैसे। उसने तो कुछ बनाया नहीं। कहीं दोनों बच्चे, अपने स्कूल के दोस्तों के लिए तो नहीं ले गए। या उन्होंने खा लिए। मगर खाते तो पता भी चलता। वैसे भी वे इतनी खट्टी चीज खाते नहीं थे। गला खराब होने का डर रहता था।

शाम को उसने बच्चों से पूछा, तो वे बोले, "न हम उन्हें स्कूल ले गए, न ही खाए।" तो फिर कहां गए?

अगले दिन निर्मला ने आटे का ड्रम खिसकाया, तो दंग रह गई। वहां करौंदों का ढेर लगा था। उसकी समझ में नहीं आया कि ये यहां कैसे आए। अगर बच्चों ने यहां छिपाए, तो क्यों छिपाए? उसने करौंदों को फिर से टोकरी में रख दिए। सोचने लगी कि आज ही इनका कुछ करना पड़ेगा। वहां बैठकर वह सब्जी काट रही थी कि जोर से हंसी, "अच्छा तो तुम हो। भला इनका क्या करोगी? अपने बच्चों के लिए चटनी बनाओगी या मुरब्बा?"

उसने देखा था कि एक चुहिया करौंदा मुंह में दबाकर भाग रही थी। उसने पहली बार किसी चुहिया के करौंदा प्रेम को देखा था। वह उठी और उसी वक्त उसने करौंदों को काटकर पतले कपड़े से ढककर धूप में सुखाने रख दिया। और बोली, "अब बताओ चुहिया रानी, क्या करोगी? अब तो तुम्हें इन्हें तोड़ने के लिए पेड़ पर ही चढ़ना होगा। दांत भी खट्टे होंगे और याद रहे कि कांटों से भी बचना होगा।"

निर्मला ने सोचा, 'बच्चों को बताऊंगी तो वे कितना हंसेंगे। और चुहिया का नाम ही रख देंगे, 'करौंदे वाली चुहिया।' ❀

शॉन द शीप

श्रेक

बचपन को बनाया यादगार

फैंटम

हमारे बचपन को गुदगुदाने वाले इन कॉमिक पात्रों को जरा ध्यान से देखो। फिर गूगल पर उनके बारे में सर्च करो। बहुत सी नई जानकारियां मिलेंगी।

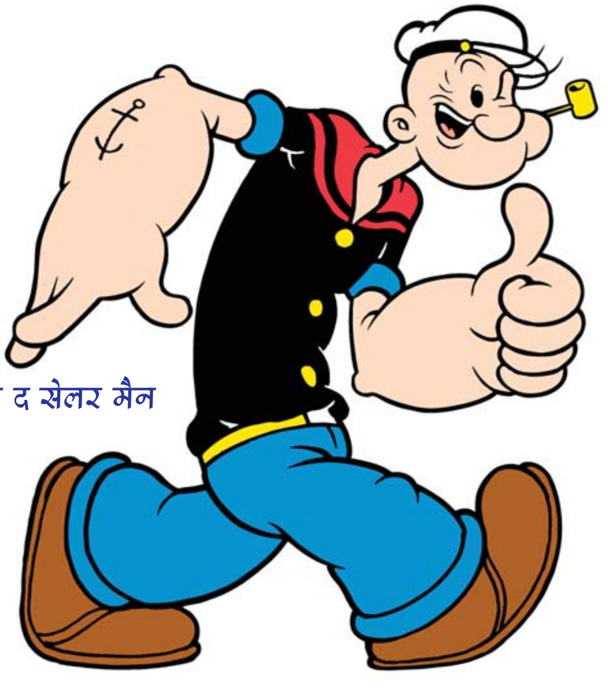
पोपाय द सेलर मैन

थॉमस द टैंक इंजन
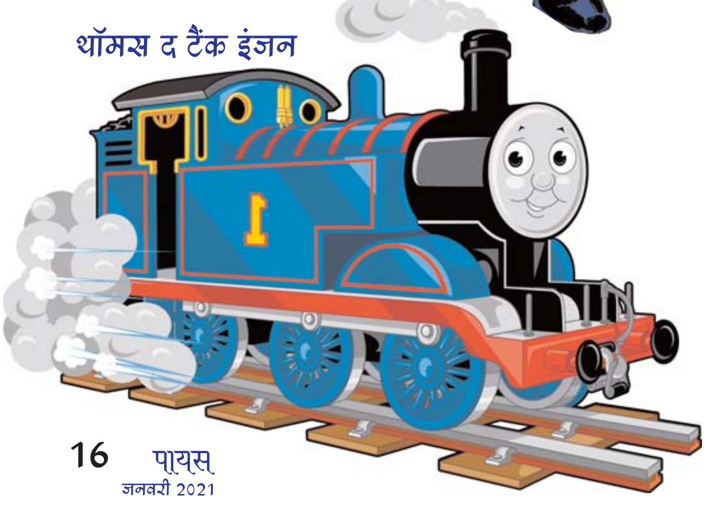

स्कूबी डू

फ्लिंस्टोन

डॉनल्ड डक

ऑसवल्ड

नॉडी

पॉवरपफ गर्ल्स

कजली की बखरी

गली के कुत्ते अजब-गजब होते हैं। वे ना जाने कहां से अचानक आते हैं और किसी के घर के दरवाजे को अपना समझ लेते हैं। फिर उन्हें कोई प्यार करे या ना करे, उन्हें खाना मिले या ना मिले, वे अपना काम करते रहते हैं। कोई झोला लिए कबाड़ा बीनने वाला निकले या फिर किसी दूसरी गली का जानवर आ जाए, वे उसे अपने इलाके से बाहर निकालकर ही दम लेते हैं।

उसका नाम ना जाने कैसे कजली पड़ गया। दिखने में भी कोई खास सुंदर नहीं, चितकबरा सा, धारियों वाला। कालोनी में एक खाली जमीन का टुकड़ा था। उस पर चौहद्दी बनी हुई थी। भीतर रघु अपनी पत्नी के साथ रहता था। वहां मकान बनाने की ढेर सारी सामग्री भी रखी थी। कजली उसी पर बैठा रहता। दोनों पति-पत्नी मेहनत-मजदूरी करते, सारे दिन घर से बाहर रहते और कजली का डेरा उस चौहद्दी के भीतर रहता। शाम को रघु घर लौटता, तो उसे रोटी मिल जाती।

वैसे उस कालोनी में और भी कुत्ते थे, कालू, रोमियो, लाभू, पिद्दी और गोल्डी। ये सब एकसाथ गुट बनाकर रहते। परंतु कजली का कोई दोस्त नहीं। जब मौका मिलता, कालू-रोमियो का गिरोह कजली को पीटने आता, तो वह कूदकर अपनी चौहद्दी के पार रघु के मकान में आ जाता। रघु की घरवाली कहती, "यह तो कजली की बखरी है।"

एक दिन सुबह से कजली को उसकी बखरी से बाहर कर दिया गया, कुछ

चित्र : इंदिरा

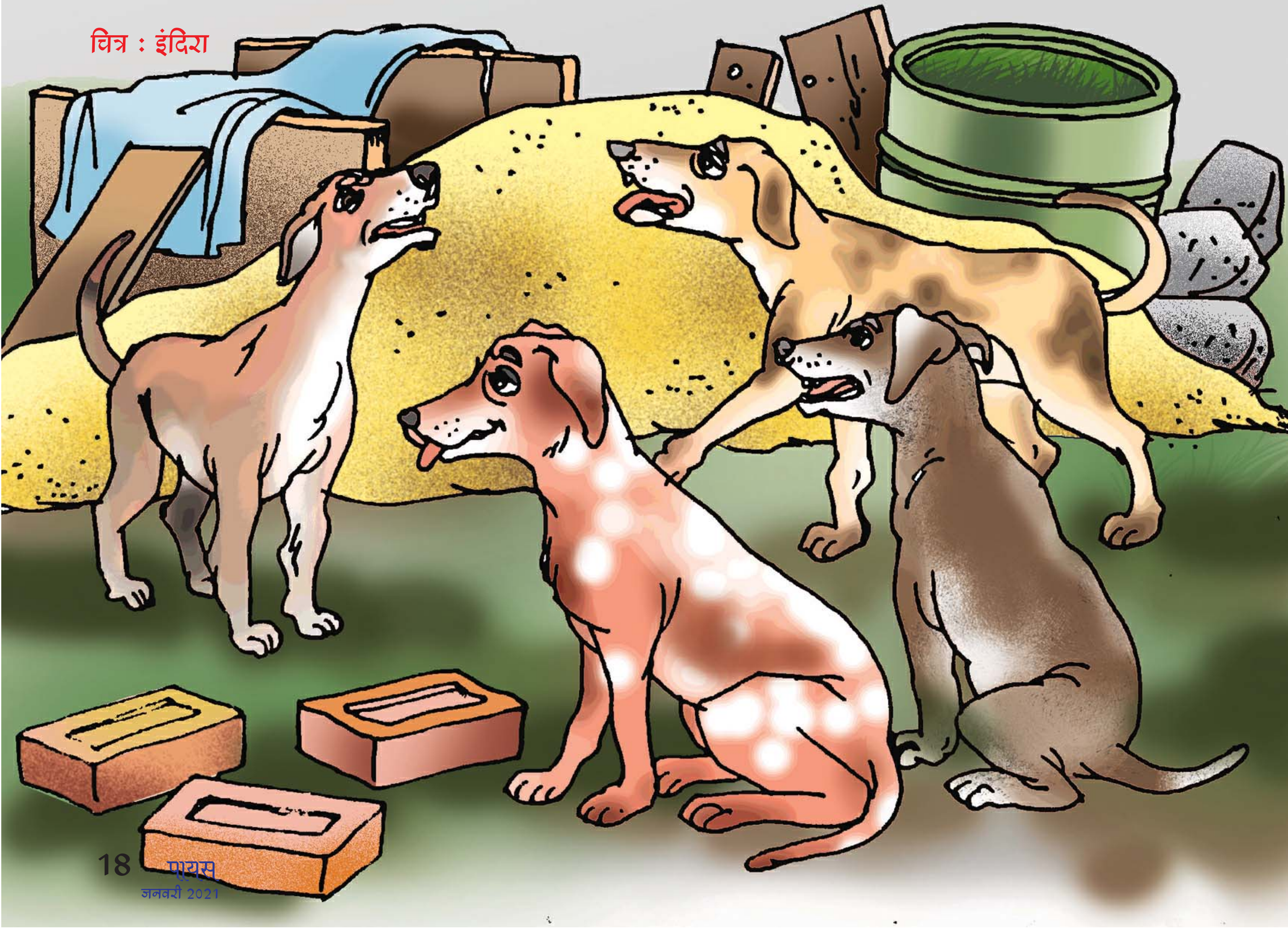

लोग आए और उन्होंने सबसे पहले रघु की झोंपड़ी तोड़ दी। कजली गुर्राया, काटने दौड़ा, लेकिन रघु व उसकी घरवाली ने उसे पकड़ लिया, "नहीं कजली, ऐसा नहीं करते। चलो भागो।"

कजली समझ नहीं पा रहा था कि उसकी बखरी टूट रही है और उसका मालिक रघु उलटे उसे ही डांट रहा है। दिन होते-हाते बहुत से लोग वहां आ गए। उन्होंने चूने से सफेद लाईन डाली और खुदाई करने लगे। रघु और दूसरे काम करने वालों के लिए अलग से बखरी बन गई। कजली को यह तो संतोष था कि रघु वहीं है, लेकिन अब संकट था कि यदि कालू का गैंग मारने आया, तो भागकर कहां जाएगा?

उधर कालू-रोमियो भी देख रहे थे कि कजली का मकान छिन गया है। उन्होंने अपनी तरफ से युद्ध-विराम जैसा कर दिया। शाम तक कई ट्रक बालू-रेत आ गई और रेत के एक ऊंचे से ढेर पर कजली ने डरते-डरते अपना कब्जा कर लिया। अब कालू वगैरह भी इसी रेत में कूदते, एक-दूसरे को पटकते, पंजे से धूल उड़ाते। बस अब कजली को पीटते नहीं। शायद, कजली के अधिकार क्षेत्र में उन्हें इतनी रेत में खेलने को जो मिल गया था। कुछ ही दिनों में वहां तीन मंजिला इमारत का ढांचा बन गया। हर मंजिल पर चार फ्लैट। एक बार फिर रघु व उनके साथियों की झोपड़ियां टूटीं व अब वे लोग इन्हीं अधबने फ्लैट में पहुंच गए।

कजली भी अब तीसरी मंजिल की छत तक जाता, वहां से भौंकता। कालू-रोमियो गैंग को लगा कि अब कजली को घमंड आ गया है। वे एक बार फिर कजली को पीटने का मौका देखने लगे, लेकिन कजली भी खतरा देखकर तीसरी मंजिल के ऊपर वाले छज्जे पर भाग जाता। हालांकि उसकी आत्मा तो नीचे रेत-बालू में बैठने में ही फंसी रहती। कजली को पिटता देख रघु वगैरह भी कालू के साथियों को भगा देते। कालू-रोमियो गैंग की इच्छा होती कि रेत पर खेलें, पर मजदूर कुत्तों के संभावित झगड़े के डर से उन्हें भगा देते।

निर्माण का काम कई दिनों से चल रहा था। अब काम कराने वाला ठेकेदार भी पहचान गया कि कजली यहीं का कुत्ता है। वह भी दिन में अपने खाने से उसके लिए कुछ ना कुछ निकाल देता। फिर पूरे भवन में भी कई अन्य काम करने वाले थे। कजली को भरपूर खाना मिल रहा था। उसकी चौकीदारी भी बढ़ती जा रही थी। एक रात तो कोई सीमेंट चुरा रहा था और कजली ने भौंक-भौंककर सभी को जगा लिया। कजली की आवाज के साथ कालू-रोमियो गैग के कुत्ते भी पहुंच गए। रघु और उसे साथी भी आ गए। इस तरह कजली के लिए सभी का प्रेम बढ़ गया और कजली का दूसरे कुत्ता-समूह से टकराव भी कुछ कम हुआ। एक बार फिर वे सभी रेत-बालू में खेलने लगे।

देखते-देखते मकान पूरा हो गया। रंगाई-पुताई हो गई। रघु और दूसरे मजदूरों की बखरी फिर उजड़ गई। पता ही नहीं चला कि वे कहां गए। कजली कोई तीन साल से उनके पास था। कजली को उनकी याद भी आती, लेकिन किससे कहता? कैसे कहता? वह तो भला हो ठेकेदार का कि हर दिन कजली के लिए खाना ले आता।

फिर मकान में लोग भी रहने आ गए। बाहर से रेत भी उठ गई। एक बार फिर कजली बेघर हो गया। बस, कजली ने उस घर का दरवाजा नहीं छोड़ा, जहां उसकी आंख खुली थी। सबसे नीचे वाली मंजिल पर जो लोग रहने आए, उनका बेटा रमन कजली को देख रहा था। ठेकेदार ने बताया, "यह कजली है। यहीं रहता है। इसने एक बार चोर भी पकड़वाए थे।"

रमन ने डरते-डरते कजली के सिर पर हाथ रखा और कजली ने भी अपनी आंखें मींच लीं व जमीन पर लेट गया। कजली को रमन ने ब्रेड खाने को दी और वह उनके घर में आ गया। लेकिन यह क्या?

"छी, यह गंदा कुत्ता कैसे भीतर आ गया? बाहर करो इसे।" मम्मी इतनी जोर से चिल्लाईं कि कजली खुद घर से बाहर हो गया। मम्मी इस बात पर राजी थीं कि कजली को खाना मिलेगा, लेकिन घर के भीतर नहीं आएगा।

दीवाली की शाम सभी जगह धूम-धड़ाके के पटाखे चल रहे थे और कजली डर के मारे इधर-उधर भाग रहा था।

अपने लेखक को जानिए

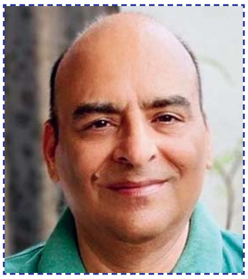

पंकज चतुर्वेदी : आरंभ में पत्रकार, फिर अध्यापन। 'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' (एनबीटी) में बच्चों की किताबों के संपादक हैं। रोजाना किसी न किसी अखबार में कॉलम लिखते हैं। कहानीकार तो अच्छे हैं ही, एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी अनुकरणीय। पंकज ने कोरोना संकट में लोगों तक सहायता पहुंचाने के लिए खूब काम किया

रमन की मम्मी को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होंने उसे घर के भीतर कर लिया। उसके बाद कजली को छूट थी कि वह कभी भी भीतर आए, बाहर जाए। बाकी उसने अपनी ड्यूटी तो संभाल ही ली थीं। वह कूरियर वालों को भी घर के पास फटकने नहीं देता।

कालोनी में नई सड़क बनने का काम शुरू हो गया। गिट्टी-पत्थर पड़ गए। रोड-रोलर से उन्हें समतल किया गया। जगह-जगह बालू और लाल मुरम के ढेर लगा दिए गए। कजली और कालू गिरोह दोनों के लिए यह मौज-मस्ती का समय था। रेत-बालू के इतने बड़े-बड़े ढेर, खूब गुलाटी मारो, एक दूसरे को पटको, पीठ खुजलाओ।

हल्ला हो गया कि कोरोना वायरस के कारण पूरा देश बंद रहेगा। कोई काम-धंधा नहीं चलेगा। बाजार बंद, बस-ट्रेन बंद। लोगों का सड़क पर निकलना बंद। इस सड़क से सुबह से दिन तक पचास से ज्यादा तो स्कूल की बसें निकलती थीं। बहुत सारी पिकअप वैन भी। लेकिन लॉक डाउन ऐसा हुआ कि सब तरफ सन्नाटा।

अब ना तो सड़क पर कोई आ-जा रहा था और ना ही सड़क का काम चल रहा था। कजली के जीवन के ये शायद सबसे शानदार दिन थे। शान से रेत पर बैठा रहता। रमन भले ही बुलाए, घर के भीतर जाने को राजी ही नहीं होता। बस खानाा खाया और रेत पर कब्जा जमा लिया। दिन की तीखी गरमी में जरूर चुपके से रमन के घर की बालकनी में टपकते नल के नीचे बैठ जाता। जैसे सी धूप ढलती, रेत का ढेर फिर से उसका ठिकाना होता।

पहले-पहल रमन की मम्मी ने भी उसे खूब बुलाया, लेकिन उसे रेत से ज्यादा अच्छा कुछ नहीं लगता। उसने मान लिया था कि अब उसे किसी बखरी की जरूरत नहीं। रेत से ज्यादा सुख कहां मिलेगा? यही उसकी बखरी हुई। भले ही उसको रेत में बैठने का सुख था, लेकिन ऐसा नहीं कि कजली अपनी ड्यूटी भूल गया हो।

उस तरफ कालू को कोई बीमारी हुई और वह मर गया। इससे उनका गुट थोड़ा कमजोर हो गया। फिर उनके हिस्से में भी रेत-बालू के कई टिब्बर आए थे, तो कजली से भिड़ने का कोई कारण उन्हें समझ नहीं आ रहा था। कजली इधर अपनी रेत में मस्त था और रोमियो-पिद्दी उधर।

पांच महीने की नीम शांति के बाद अनलॉक शुरू हो गया। एक दिन सुबह से जेसीबी मशीन, डंपर, रोड रोलर गड़गड़ाने लगे। इतने दिनों की शांति के बाद इस तरह का शोर कजली को दीवाली के धमाके की याद दिला रहा था। उसने पूंछ दबाई और चुपके से रमन के घर में घुस गया। मम्मी ने पहले गुस्से में, फिर आश्चर्य से देखा, आखिर आज इसे क्या हुआ है?

शाम तक रेत के ढेर सड़क पर बिछ गए थे। कजली का 'स्वर्ग' बिखर गया था। शाम को उसने खाना भी नहीं खाया। रमन की ओर डबडबाई आंखों से देखता रहा। जैसे पूछ रहा हो, "मेरी रेत की बखरी क्यों उजाड़ दी?"

मेरी सर्दी मेरा गीत

अपने लेखक को जानिए

दिविक रमेश : दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और प्रिंसिपल रहे। हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि, बाल-साहित्यकार, अनुवादक और चिंतक। विविध विधाओं में लगभग 80 पुस्तकें प्रकाशित।

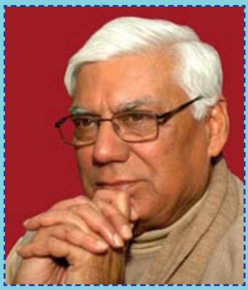

सर्दी बहुत है तभी न मम्मी
मैंने देखो जुराब पहनी।
अरे हुई क्या मज़ेदार जो
मुझे बात वह तुमसे कहनी।

देखो मम्मी यह अंगूठा
कैसे झांक रहा है बाहर!
जितना करती हूं मैं अन्दर
झट से आ जाता यह बाहर।

फटी जुराब से मुंह निकाले
निकल-निकल आता है ऐसे।
खुला देख के खटका चूहा
भागम भाग मचाता जैसे।

झाड़ू-पोचा, बर्तन करके
जब घर पर आऊंगी बेटी।
सबसे पहले इस जुराब को
सी दूंगी मैं सच्ची बेटी।

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

चौबेलाल

तीस रोटियाँ, बीस कचौड़ी,
भरकर लड्डू थाल।
चार किलो गटगट पी जाते,
रबड़ी चौबेलाल॥

इतना खाकर कभी-कभी तो,
रहते भूखे पेट।
डॉक्टर कहता कुछ कम खाओ,
तुम हो ओवरवेट॥

रिक्शेवाले, ताँगेवाले,
माँगें तिगुने रेट।
लगे बैठने एक कार में,
फँसा गेट में पेट॥

चौबेलाल दर्द से चीखे,
हुआ जोर का शोर।
डर के मारे किए सभी ने
बंद घरों के डोर॥

संतोष कुमार सिंह

चित्र व डिजाइन : सुशील दोषी

पायस बनाएँ

आओ पायस आज बनाएँ।
ले लें थोड़ा कच्चा तेल
पानी का इसमें हो मेल
नया-नया होगा यह खेल
जमकर इसको खूब हिलाएँ
आओ पायस आज बनाएँ।

मक्खन सा यह बन जाएगा
छानो, तो ना छन पाएगा
कभी पेंट सा तन जाएगा
सब मिल जादू एक दिखाएँ
आओ पायस आज बनाएँ।

पायस को ही कहें इमल्शन
मेरे चाचू,जो हैं 'न्यूटन'
मिक्स करें नाटक संग पोयम
मीठा पायस हमें खिलाएँ
आओ पायस आज बनाएँ।

डॉ. अनुपमा गुप्ता

अपने लेखक को जानिए

सन्तोष कुमार सिंह : सेवानिवृत्त इंजीनियर। अब स्वतंत्र लेखन। बाल कविताएं, बाल गीत, बाल कहानियां और बाल पहेलियां लेखन। बाल साहित्य की 29 पुस्तकें प्रकाशित।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. अनुपमा गुप्ता : पेशे से डॉक्टर। बाल रचनाओं के लिए प्रेरणा बच्चों से ही लेती हैं। अपने चारों और बिखरी प्रकृति, इंसानों और जानवरों से भी प्रेरणा पाकर कविताएं लिखना बहुत भाता है।

भैया जी

क्यों इतना हो हमें सताते?
बोलो भैया जी।

गुलगुल-गुलगुल चुन्नू के,
गुलगुली मचाते क्यों?
मुझे पकड़कर, कहो कान में
गाना गाते क्यों?
क्यों कसकर हो धौल जमाते,
बोलो भैया जी।

गोलू जब सो जाता, उसके
मूँछ बना देते।
मोनू भैया के लम्बी-सी,
पूँछ लगा देते।
क्यों ऐसे हो हमें चिढ़ाते?
बोलो भैया जी।

कड़ी ठंड में ठंडे-ठंडे,
हाथ लगाते हो।
घुप्प अँधेरे में कोने में,
क्यों छुप जाते हो?
फिर म्याऊँ कर हमें डराते,
बोलो भैया जी ।

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

खराश

उफ! मुझको हो गयी खराश।
कल मैंने की थी नादानी
बात नही थी माँ की मानी,
कुल्फी खाकर, गट-गट-गट-गट
खूब पिया बर्फीला पानी।
सोच रहा हूँ माँ का कहना
माना होता मैने काश!
उफ! मुझको हो गयी खराश।

बकरी जैसा मैं मिमियाऊँ
गाना चाहूँ, कैसे गाऊँ?
नहीं हलक से उतरे रोटी
लार घूँटने भी ना पाऊँ।
बेचैनी के बादल बरसें
हुआ गले का सत्यानाश।
उफ! मुझको हो गयी खराश।

मुझे बुलाकर गले लगाकर
माँ ने थोड़ा नमक मिलाकर
दिया गुनगुना पानी मग में
कहा, 'गरारे कर लो जाकर'।
किए गरारे चैन मिला, तो
मै बोला, 'अम्मा शाबाश'!
उफ! मुझको हो गयी खराश।

शादाब आलम

अपने लेखक को जानिए

डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' : नागेश प्राध्यापक हैं, परंतु उनकी पहचान एक साहित्यकार और आलोचक के रूप में ज्यादा है। इनकी कविताएं और कहानियां चर्चित हैं। कई पुस्तकें प्रकाशित।

अपने लेखक को जानिए

शादाब आलम : बालसाहित्य की लगभग सभी विधाओं के साथ मुख्य रूप से बाल कविता एवं बाल गीत लेखन। हंसी का चूरन (बालकाव्य संग्रह) लोकोदय प्रकाशन से प्रकाशित।

बिल्ली बाई

बिल्ली बाई बड़ी घुमक्कड़,
इस घर पर, कभी उस घर पर।
खाती-पीती दिनभर रहती,
और पचाती घूम घूमकर।

मिला तो खायी दूध-दही,
नही मिला तो ठेंगे पर।5
मन का अपने मिला कभी तो
मछली खाई डोंगे भर।

कहती म्याऊँ -म्याऊँ जब
डर जाते हैं चूहे पर।
बिल्ली बाई की आँखें,
लगी हुई हैं चूल्हे पर।

राम करन

एकता

लिये कैमरा चला भेड़िया,
था जंगल का सीन।
कुत्ता, बिल्ली, चूहा बोले,
फोटो खींचो तीन।

देख एकता तीनों की वह,
हुआ खुशी में लीन।
बंदर से खिंचवाई उसने,
फोटो थी रंगीन

शिव मोहन यादव

अपने लेखक को जानिए

राम करन : वायु सेना से सेवा निवृत्ति के बाद फिलहाल अध्यापन। कई कहानियां, कविताएं प्रकाशित। डॉक्टर परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार 2018 का तृतीय पुरस्कार।

अपने लेखक को जानिए

शिव मोहन यादव : बच्चों के अच्छे कवि। पत्रकारिता के संग लेखन भी। 'लल्ला और बिट्टी' समेत तीन पुस्तकें प्रकाशित। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से दो बार सम्मानित।

जन्मदिन पर नमन

सुभाष चंद्र बोस
तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को ओडिसा के नगर कटक में हुआ। उनके पिता जानकीदास बोस बड़े नामी वकील थे। सुभाष कुल मिलाकर चौदह भाई-बहन थे। उनका भरा-पूरा परिवार था।

पिता की इच्छा थी कि सुभाष खूब पढ़े और आईसीएस बनकर बड़ा सरकारी अफसर बने। पिता की इच्छा पूरी करने के लिए न चाहते हुए भी सुभाष 15 सितंबर 1919 को इंग्लैंड चले गए। परीक्षा पास करके उन्होंने पिता की तो इच्छा पूरी कर दी, पर अंग्रेजों की गुलामी करने से उन्हें नफरत थी। अतः अंत में नौकरी से त्यागपत्र देकर वह भारत लौट आए।

भारत लौटे, तो 20 जुलाई 1921 को मुंबई में उनकी पहली बार गांधीजी से मुलाकात हुई। जल्दी ही सुभाष देश के महत्वपूर्ण युवा नेता माने जाने लगे। नेहरूजी की अध्यक्षता में 26 जनवरी 1930 के लाहौर में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में ही सुभाष के कहने पर पूर्ण स्वराज की मांग रखी गई और तय किया गया कि 26 जनवरी का दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाएगा। चूंकि भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ, इसलिए आजादी के बाद 1950 में 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस घोषित किया गया।

बाद में सुभाष की राह कांग्रेस से अलग हो गई और उन्होंने अपनी पार्टी फारवार्ड ब्लाक बनाई। द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हो चुका था। अंग्रेज सरकार ने सुभाष को उनके ही घर पर नजरबंद करके पुलिस का कड़ा पहरा बिठा दिया। पर वह पुलिस को चकमा देकर निकल भागे।

सुभाष 1942 में जर्मनी पहुंचे। जर्मनी में हिटलर से उन्हें ज्यादा सहायता नहीं मिली। अंत में सुभाष इंडोनेशिया आ गए। फिर सिंगापुर में रासबिहारी बोस ने अपनी आजाद हिंद फौज का नेतृत्व उन्हें सौंप दिया। फौज के प्रधान सेनापति बनने के बाद सुभाष ने यहीं नारा दिया था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"

आजाद हिंद फौज ने भारत की ओर कूच किया। अंग्रेजों के विरुद्ध कई युद्ध भी जीते। पर अंत में आजाद हिंद फौज को आत्मसमर्पण करना पड़ा। सुभाष अब रूस की ओर निकले, पर 23 अगस्त 1945 को उनका विमान जापान के ताइहोकी के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु हो जाने का संदेह है, पर आज तक लोग उन्हें जीवित मानते हैं। ❀

बादल रोने लगा

एक था नन्हा बादल। बहुत शरारती। एक दिन आसमान में घूमने निकला। एक गांव में कुछ बच्चे खेल रहे थे। उन्हें देख बादल को शरारत सूझी। सोचा, इनको भिगो दिया जाए। बहुत मजा आएगा।

उसने पानी गिराना शुरू कर दिया। झमाझम-झमाझम-झमाझम।

'ता-ता-थैया, ता-ता-थैया। झूमो-नाचो-गाओ भैया।' पानी बरसता देख बच्चे खुशी से नाचने लगे।

'अरे, यह सब पागल हो गए हैं। डरने के बजाय नाच रहे हैं?' बादल ने मुंह बनाया और आगे चल दिया।

आगे खेतों में कई किसान बैठे थे। सभी को चिंता थी कि बुआई कैसे की जाए? इस साल पानी तो बरसा ही नहीं।

'चलो इन सबको डराया जाए।' बादल ने सोचा और पानी गिराने लगा। वह गड़गड़ाकर बरसा, खूब बरसा। मूसलाधार बरसा।

इससे सारे खेतों में पानी भर गया। उदास किसान खुश हो गए। वे झूमते हुए खेतों में हल चलाने लगे।

'मैंने आधा पानी गिरा दिया, मगर कोई डरा ही नहीं, उलटे खुश हो रहे हैं। लगता है, ये सब भी पागल हो गए हैं।' बादल गुस्से से दांत पीसते हुए वहां से आगे चल दिया। वह चलता रहा, चलता रहा और काफी दूर आ गया।

एक गांव की चौपाल में कई आदमी जमा थे। सभी के चेहरों पर उदासी छाई हुई थी। इस साल पानी न बरसने के कारण सूखा पड़ने वाला था। इसलिए परेशान किसान सरकार से मदद की मांग करने वहां आए थे।

'यहां ढेर सारे लोग जमा हैं। कोई न कोई जरूर डर जाएगा।' सोचकर बादल ने जोर से दहाड़ लगाई, 'गड़-गड़-गड़-गड़।'

उसकी गड़गड़ाहट सुन मुखिया जी खड़े हो गए। उन्होंने अपनी हथेलियों को पलकों के उपर रख ध्यान से आसमान की ओर देखा, फिर बोले, "अब चिंता करने की कोई जरूरत नहीं। बादल आ गए हैं। पानी बरसने वाला है। आप सब फसल बोने की तैयारी कीजिए।"

यह सुन वहां जमा भीड़ खुशी से तालियां बजाने लगी। सभी की उदासी गायब हो गई थी।

'अरे, आज तो मुझसे कोई डर ही नहीं रहा?' अब तो बादल का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुंचा। वह पूरी ताकत से गरजने लगा। साथ ही बिजली भी चमकाने लगा। लेकिन वह जितनी जोर से गरजता, नीचे खड़े आदमी उतना ही खुश हो जाते।

'लगता है, पूरा का पूरा गांव पागल हो गया है।' बादल दांत पीसते हुए वहां से भी चल दिया।

एक आदमी सड़क पर जा रहा था। पसीने से लथपथ। तेज धूप से उसकी हालत खराब थी।

'यह अकेला है। जरूर डर जाएगा।' सोचकर बादल

उसके सिर के उपर आ गया।

बादल की छांव से कुछ राहत मिली, तो उस आदमी ने अपनी चाल तेज कर दी। यह देख बादल का गुस्सा बेकाबू हो गया। वह पूरी ताकत से दहाड़ा, 'गड़-गड़-गड़-गड़।'

"बादल महराज, जरा और जोर से गरजो। जितना पानी तुम्हारे पास है सब मेरे उपर गिरा दो। मजा आ जाएगा।" वह आदमी बादल की ओर देख हंस पड़ा।

अब तो बादल के तन-मन में आग लग गई। वह पूरी ताकत लगाकर जोर-जोर से गरजने लगा, लेकिन वह आदमी डरने के बजाय खुश होता रहा।

गरजते-गरजते बादल का गला दर्द करने लगा। उसकी आंखों में आंसू आ गए और वह रोने लगा।

"अरे, तुम रो क्यों रहे हो?" तभी हवा ने पास आते हुए प्यार से पूछा।

"मुझसे कोई डर ही नहीं रहा। लगता है, मेरी ताकत खत्म हो गई है।" बादल फफक पड़ा।

यह सुन हवा हंस पड़ी, "दोस्त, बादलों का जन्म लोगों को डराने के लिए नहीं, मदद करने के लिए होता है। तुम सब तो बहुत प्यारे होते हो, इसीलिए सभी तुम्हारा इंतजार किया करते हैं।"

"सच।" बादल की आंखे खुशी से चमक उठीं।

"बिल्कुल सच।" हवा मुसकराई।

"लेकिन कई बादल बरस-बरसकर बाढ़ क्यों ले आते हैं?" बादल ने पूछा।

"इसके लिए बादल नहीं, इनसान दोषी हैं क्योंकि उन्होंने पेड़ों को काट डाला, नदी-नालों, तालाबों को गंदगी से पाट दिया। इससे तुम सब धरती पर जो अमृत बरसाते हो, वह इधर-उधर फैलकर तबाही मचा देता है।" हवा ने बताया।

"क्या इनके लिए हम लोग कुछ कर नहीं सकते?" बादल ने अपने आंसू पोंछते हुए पूछा।

"क्यों नहीं कर सकते।" हवा उसकी ओर देख मुसकराई। फिर बोली, "तुम्हें वहां जाकर बरसना चाहिए, जहां पेड़-पौधे सूख रहे हैं। तुम बरसोगे, तो उनमें हरियाली छा जाएगी, इससे धरती पर खुशहाली आ जाएगी।"

"लेकिन मैं वहां तक जाऊंगा कैसे?" बादल ने पूछा।

"मैं ले जाऊंगी तुम्हें वहां तक। मुझे सारे रास्ते मालूम हैं।" हवा ने बहुत प्यार से बादल का हाथ थाम और उसे चलने का ईशारा किया।

बादल खुशी-खुशी हवा के साथ चल दिया। उसे धरती पर हरियाली जो लानी थी। ❀

अपने लेखक को जानिए

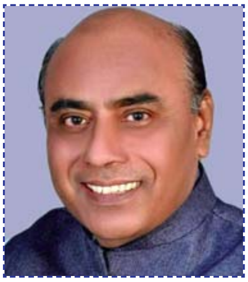

संजीव जायसवाल 'संजय' : 40 वर्षों से साहित्य साधना में लीन। रेलवे की नौकरी से सेवानिवृत्ति के बाद पूरी तरह साहित्य को समर्पित। अब तक एक हजार से अधिक कहानियां और 25 से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित। इनकी एक पुस्तक का विश्व की 112 भाषाओं में अनुवाद हुआ।

गांधी स्मृति

–अनिल

गांधीजी का जन्म यूं तो गुजरात में हुआ, पर उनका दिल्ली से गहरा नाता था। जब भारत की आजादी की तैयारी चल रही थी, तो गांधीजी अधिकतर उत्तर भारत में ही रहते थे। दिल्ली आने के दौरान वह अक्सर गोल मार्केट के पास स्थित वाल्मिकी मंदिर परिसर में रहना पसंद करते थे।

भारत की आजादी के दौरान शरणार्थी दिल्ली आए, तो गांधीजी दिल्ली के एक व्यवसायी घनश्यामदास बिरला के बंगले 'बिरला भवन' में रहने चले गए जो 5, अलबुकर मार्ग पर था।

यहीं 30 जनवरी 1948 को गांधीजी प्रार्थना स्थल पर जा रहे थे। सैकड़ों लोग उनके साथ प्रार्थना में शामिल होने के लिए वहां जमा थे। वहीं शाम के पांच बजकर 17 मिनट पर नाथूराम गोडसे ने गांधीजी पर 3 गालियां बरसाईं। गांधीजी की वहीं तत्काल मृत्यु हो गई।

गांधीजी की मृत्यु के बाद सरकार ने बिरला परिवार से इस भवन को गांधी स्मृति में बदलने की बात की। कई वर्षों की बातचीत के बाद 1971 में सरकार ने यह इमारत उनसे खरीद ली। भवन की मरम्मत के बाद 15 अगस्त 1973 को इसे आम जनता के लिए गांधी स्मृति नाम से खोल दिया गया। इस घटना की याद में अलबुकर मार्ग का नाम बदलकर 30 जनवरी मार्ग कर दिया गया।

इस स्मृति भवन में गांधीजी के जीवन के अंतिम 144 दिनों की यादें संजोकर रखी गई हैं। 1994 में गांधी जी के 125वीं जयंती पर यहां इंटरनेशनल सेंटर फार गांधियन स्टडी एंड रीसर्च सेंटर बनाया गया। यहां गांधी जी के 6000 से ज्यादा मूल फोटो के साथ उनसे जुड़ी करीब साठ हजार पुस्तकें भी हैं। यहां बच्चों के लिए भी एक कोना सुरक्षित है।

कभी दिल्ली घूमने आओ, तो भले कुतुबमीनार न घूम पाओ, पर गांधी स्मृति घूमना मत भूलना। दो अक्टूबर, 1944 को महात्मा गांधी के 75वें जन्मदिवस पर आइंस्टीन ने अपने संदेश में लिखा था, 'आने वाली नस्लें शायद मुश्किल से ही विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस से बना हुआ कोई ऐसा व्यक्ति भी धरती पर चलता-फिरता था।'

मुख्य इमारत

बच्चों संग गांधीजी

विश्व शांति को समर्पित घंटा

बैठक

शहादत स्थल

हॉल

मुख्य गलियारा

भूखे भेड़िए

पूर्णिमा की रात है। अभी आसमान में चांद ऊपर चढ़ा ही है। थाली जैसा पूरा गोल चांद चमक रहा है। चांद की चांदनी से जंगल में होने वाली हर हलचल दिखाई दे रही है। पहाड़ी की तलहटी पर बैठे भूखे भेड़ियों का झुंड शिकार की योजना बना रहा है।

"सरदार, मुझे बहुत तेज भूख लग रही है।" एक भेड़िए ने जीभ को बाहर लपालपाकर बताया।

"भूख तो मुझे तुमसे भी ज्यादा लग रही है। कहो, तो यह पत्थर ही जबा जाऊं।" कहते हुए सरदार ने नीचे रखा एक पत्थर उठाया और चबाने लगा। दांतो से रगड़ खाते ही पत्थर से कर्कश आवाज निकलने लगी।

"छोड़ो, मूर्खतापूर्ण बातें। आज कहां धावा बोलना है सरदार? कोई योजना है, तो बताओ।" तीसरे भेड़िए ने सरदार से पूछा। भूख के मारे सबका बुरा हाल था।

पहाड़ी तलहटी पर कुछ दूरी पर नदी है। इसके आसपास की जमीन बहुत उपजाऊ है। पैदावार अच्छी होने से कुछ किसानों ने खेती के साथ अपने कच्चे झोंपड़े यहां बना लिए। झोंपड़े के साथ लगा हुआ पशुओं को बांधने का छप्परेल भी बना लिया, जिसमें उनके गाय, बैल, भेड़, बकरी आदि पशु बंधे रहते हैं। इनकी रखवाली के लिए पालतू शिकारी कुत्ते भी है।

सरदार भेड़िए ने गर्जना की, तो आवाज बंधे हुए पशुओं के पास भी पहुंची। डर के मारे उनमें हलचल मच गई। हलचल से एक किसान ने अनुमान लगाया कि भेड़िए आज हमला कर सकते हैं। उसने भेड़, बकरियों को खूंटे से खोलकर झोंपड़ी के भीतर ले लिया। मुर्गियां तो पहले ही से भीतर टोकरी में दुबकी हुई थीं। आहट सुन वे भी शोर करने लगीं।

आवाज सुन किसान की पत्नी और बेटी भी जाग गईं, "क्या हुआ?"

चित्र : इंदिरा

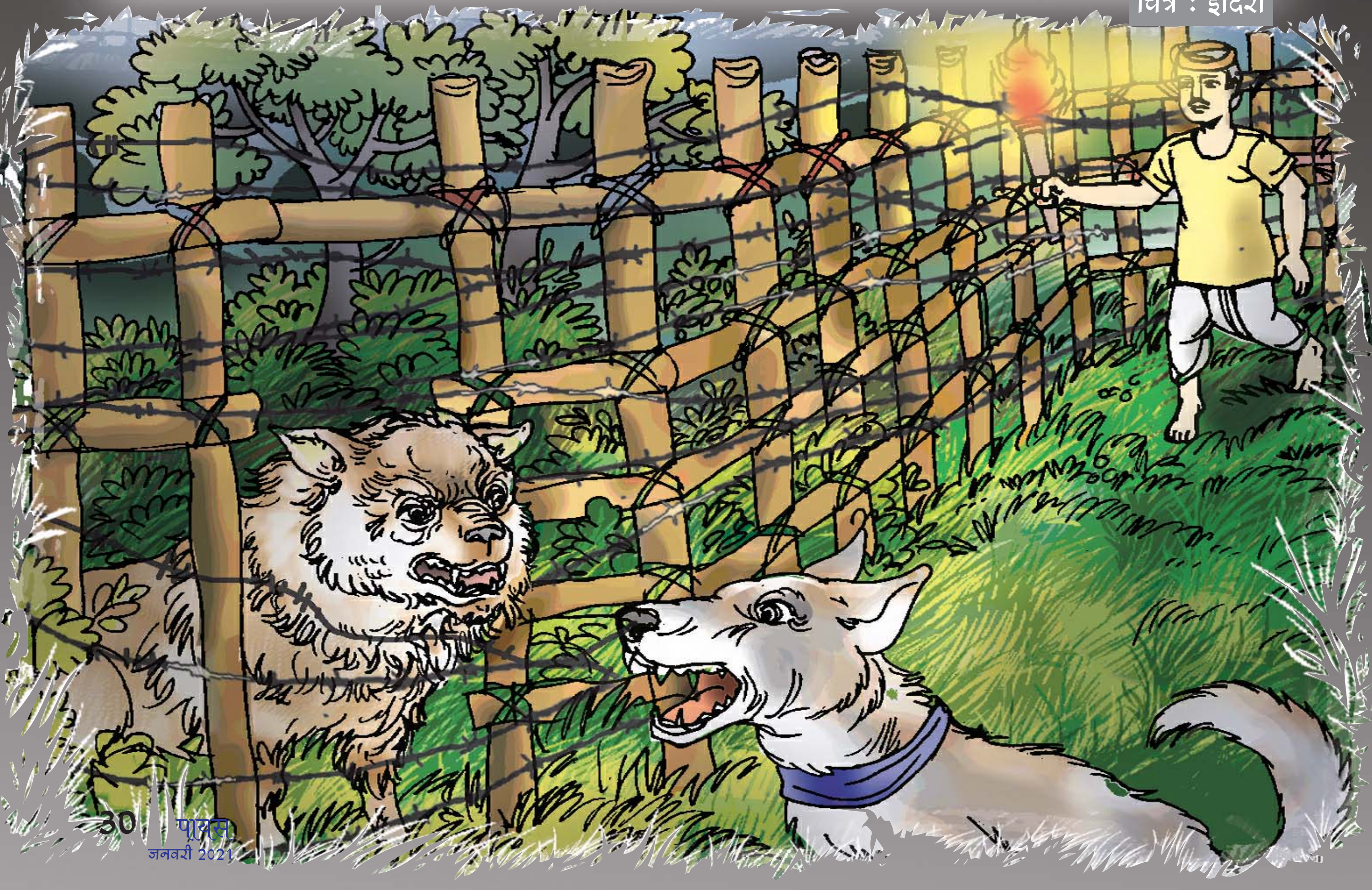

"लगता है, आज भेड़िए धावा बोलेंगे।" कहते हुए किसान ने लकड़ी के डंडे पर कपड़ा लपेटा और केरोसिन से भिगो दिया। उन्होंने 7-8 मशालें तैयार कर लीं। उनकी पूरी झोंपड़ी गाय, बकरी और मुर्गियों से भर गई थी। बस एक कोने में चूल्हे के आसपास थोड़ी सी जगह बची थी, जहां पूरा किसान परिवार चूल्हा जलाकर मद्धिम रोशनी में बैठ गया। रात बीतने लगी।

उधर भेड़ियों का सरदार, जो अब तक चक्कर काट रहा था, रुककर खड़ा हो गया। फिर कहने लगा, "शिकार तो इतना है कि हम सबका पेट भर सकता है।"

"कहां है सरदार? बताओ तो जरा।" एक साथ कई भेड़िए चिल्ला उठे।

"पर यह इतना आसान काम नहीं है। हमें सतर्कता और हौसले से काम लेना होगा।"

"सरदार।" भेड़ियों ने कहा, "हम सब मिलकर ताकत बन जाएंगे। हमें भूख लगी है। कुछ तो बताओ। कहां है शिकार?"

"वह देखो, वह जो रोशनी की पतली किरण आ रही है, उसी झोंपड़ी के पास बंधे हैं कई पशु। पर हमें शिकार करना है एक खास पशु का। पशुओं में भी एक लक्ष्य है हमारा। हमें सिर्फ बैल का शिकार करना है ताकि हमारा पूरा समूह पेट भर सके।"

"सरदार, क्या कह रहे हो? किसान का बैल? वह भी जागते हुए किसान का बैल? बैल की तो छोड़ो, उसके जगे में तो हम वहां से मुर्गी तक नहीं ला सकते।" एक भेड़िया पस्त होकर बोला।

"एक बार हिम्मत तो करो। एक बैल बहुत है, हम सब के लिए। भूख से निजात मिल जाएगी, कई दिनों के लिए।" सरदार की बात सुनकर भी कोई आगे नहीं बढ़ा।

"मैं जा रहा हूं शिकार के लिए। जिसे आना है, वह पीछे पीछे आ जाए।" कहकर सरदार चल पड़ा। उसके आजू-बाजू दो भेड़िए और चल पड़े। उनके पीछे एक और चलने लगा। अंत में एक-एक कर सब उठ खड़े हुए। भेड़ियों का झुंड आहिस्ता से घाटी में आगे बढ़ने लगा।

जीभ बाहर लपलपाते हुए ये लाल आंखों वाले भेड़िए उस चांदनी रात में शिकार को जाते हुए बड़े भयानक लग रहे थे। लगता था, आज वे बैल का शिकार कर ही लेंगे।

धीरे-धीरे बिना आवाज किए, वह बाड़े के पास पहुंच गए। कांटेदार, मजबूत ऊंची बाड़ को देखकर एक ने कहा, "इसे अंदर पहुंचना असंभव है।"

सरदार आंख निकालकर पीछे वाले पर गुर्राया, "शोर किया नहीं कि सब धरा रह जाएगा। बाड़ का कमजोर हिस्सा ढूंढ़ो, वहीं से हम भीतर घुस पाएंगे।"

आवाज सुनकर शिकारी कुत्ते चौकन्ने होकर भौंकने लगे। भेड़िए कुत्ते के भौंकते ही बौखला गए। पीछे वाले भेड़िए ने कहा, "भागो...भागो...भागो...।"

तभी सरदार चिल्लाया, "देखो, यह बाड़ का कमजोर हिस्सा है, हम इस खाली जगह से भीतर घुस सकते हैं। आओ, मेरे पीछे तुम भी आगे बढ़ो।"

सरदार भीतर घुसने लगा। तभी उसे जलती हुई मशाल लेकर शोर मचाता किसान आता दिखा।

"किसान के साथ उसकी पत्नी और बेटी भी दोनों हाथों में मशाल लिए पीछे आ रही हैं।" एक कमजोर भेड़िया चिल्लाया ओर भागने लगा।

सब भाग लिए और सरदार अकेला पड़ गया। उसका आधा हिस्सा बाड़ की कांटों में उलझ गया था। अंदर उसके फंसे हुए मुंह पर शिकारी कुत्तों ने झपट्टा मारकर उसे लहूलुहान कर दिया। किसान मशाल लेकर उसे आग से दागने लगा। कंटीली झाड़ियों में फंसा हुआ सरदार चौतरफा प्रहार से बिलबिला उठा। उसने भयानक गर्जना की, जिसे दूर भागते हुए भेड़ियों ने भी सुनी।

"शिकार करने गया और खुद ही शिकार हो गया।" एक भेड़िया अफसोस जताते हुए बोला।

"उसके पास हौसला था, पर अक्ल नहीं थी। उसने पूरी तरह से व्यूह रचना नहीं की।"

"बिना योजना बनाए सफलता नहीं मिलती।" दूर जाते हुए भेड़िए आपस में बातें बना रहे थे।

"अब सरदार वही होगा, जो मरे हुए भेड़िए की हड्डियां लेकर आएगा।" दाईं बाजू रहने वाला भेड़िया बोला।

'कौन हड्डियां ला सकता है और कौन बन सकता है सरदार?' यह बात कई दिनों तक टोली में चलती रही। पर किसान के यहां जाने की हिम्मत कोई जुटा न पाया। ❀

अपने लेखक को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। साहित्यिक गतिविधियों में ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

जो बाइडेन अमेरिका के नए राष्ट्रपति

जोसेफ रोबिनेट्टे बाइडेन जूनियर, अर्थात 'जो बाइडेन' अमेरिका के नए राष्ट्रपति चुने गए हैं। सब कुछ ठीक रहा, तो 20 जनवरी 2021 को वह अमेरिका के 46वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ लेंगे।

जो बाइडेन भले आज अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए हैं, परंतु उन्होंने आरंभ में बहुत दुख भरे दिन देखे हैं। बाइडेन का जन्म 20 नवंबर 1942 को अमेरिका के पेनसिलवानिया राज्य में हुआ। उनकी एक बहन और दो भाई भी हैं। उनकी मां कैथरीन यूगेनिया जीन बाइडेन आइरिश मूल की हैं।

पिता जोसेफ रोबिनेट्टे बाइडेन सीनियर अच्छा कमाते थे, पर जो बाइडेन के जन्म के बाद उन्हें व्यापार में इतना घाटा हुआ कि पूरा परिवार जो बाइडेन के नाना के यहां चला गया और वहीं उनका लालन-पालन हुआ।

बचपन से जो बाइडेन एक औसत विद्यार्थी थे। पर अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से उन्होंने अपनी पढ़ाई किसी तरह पूरी की। इस बीच उनके पिता ने सेकेंड हैंड कार खरीदने और बेचने का धंधा शुरू किया और सारा परिवार फिर से एक साथ रहने लगा।

1968 में जो बाइडेन एक लॉ फार्म में काम करने लगे। फिर 1972 में उन्होंने डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से सीनेटर का चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। परंतु चुनाव जीतने के कुछ ही हफ्तों बाद एक कार दुर्घटना में जो बाइडेन की पत्नी और बेटी की मृत्यु हो गई। 1977 में उन्होंने जिल जेकब्स से दूसरी शादी की।

1988 के राष्ट्रपति चुनाव में भी जो बाइडेन खड़े हुए थे। परंतु गलत बयान और अन्य आरोपों के चलते उन्होंने बीच में ही अपना नाम वापस ले लिया।

2008 में जब बराक ओबामा डेमोक्रेटिक पार्टी की तरफ से राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बने, तो उन्होंने जो बाइडेन को उपराष्ट्रपति पद के लिए अपने साथ खड़ा किया। अगले आठ साल तक वे दोनों अमेरिका के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति रहे।

डेमोक्रेटिक पार्टी के बाइडेन डोनाल्ड ट्रम्प के विरुद्ध राष्ट्रपति चुनाव में खड़े हुए और जुलाई 2020 में हुए चुनाव में ट्रम्प को हराया। राष्ट्रपति बनने से पहले उनके पास अमेरीकी राजनीति का जबरदस्त अनुभव है।

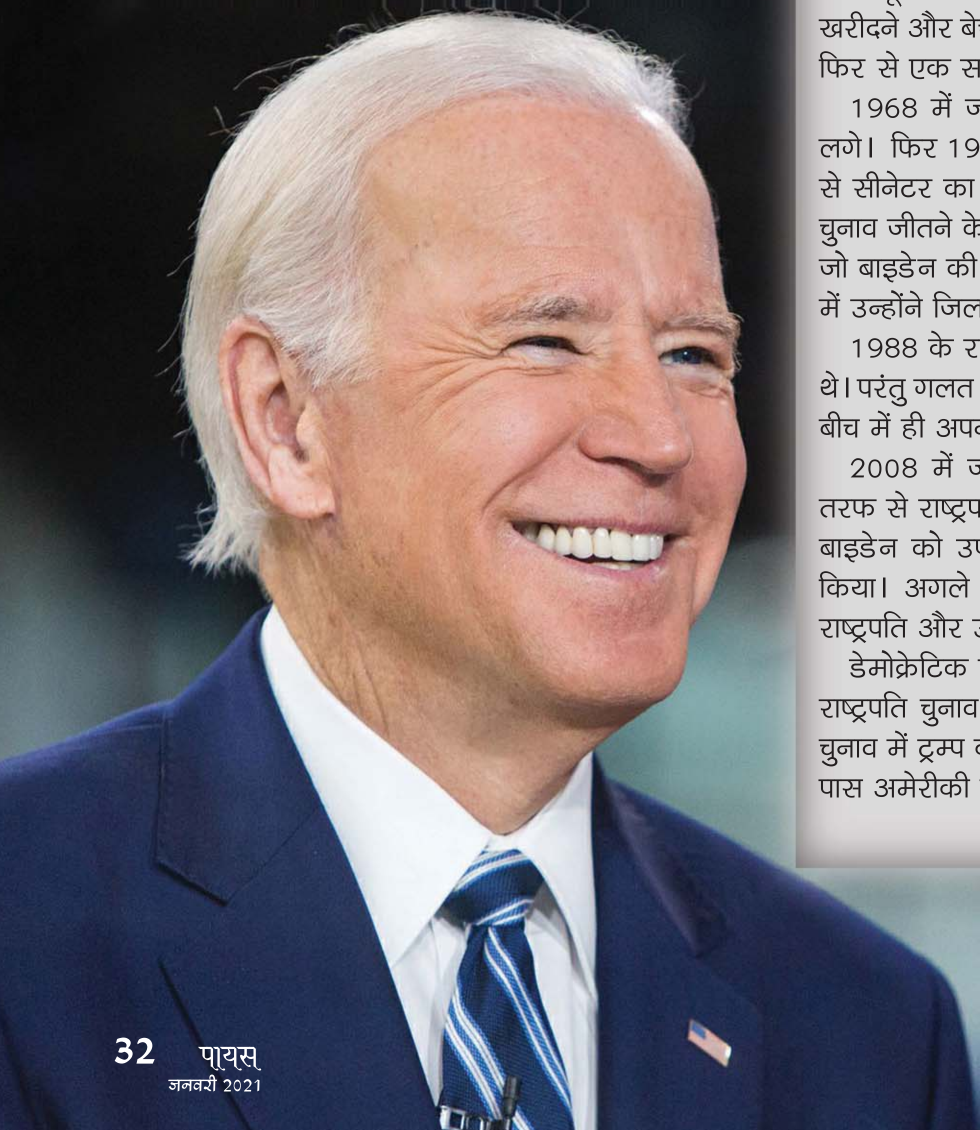

इतिहास बनाया भारत की बेटी ने

कमला हैरिस

अमेरिका की पहली अश्वेत उपराष्ट्रपति

कमला हैरिस का जन्म 20 अक्तूबर 1964 को ओकलैंड, कैलिफोर्निया (अमेरिका) में हुआ। उनकी मां श्यामला गोपालन (कैंसर रिसर्चर) 1958 में ही अमेरिका चली गई थीं। वहीं उन्होंने ब्रिटिश जमैका से आए डॉनल्ड जे. हैरिस से शादी की।

टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में अर्थशास्त्र पढ़ाने वाले कमला के पिता हैरिस जैज संगीत के दीवाने थे। कमला जब सात साल की थीं, तभी उनके माता-पिता अलग हो गए। बचपन में कमला ने भी रंगभेद का सामना किया है। उन्होंने बताया, जब वह अपनी छोटी बहन के साथ अलग हो चुके पिता के पास रहने जाती थीं, तो पास-पड़ोस के गोरे बच्चे उनके साथ इसलिए नहीं खेलते थे क्योंकि वे अश्वेत थे।

1986 में कमला ने हॉवर्ड विश्वविद्यालय से राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री ली। इसके बाद उन्होंने कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई भी की।

सन 1990 में कमला ने कैलिफोर्निया राज्य में डिप्टी डिस्ट्रिक्ट एटॉर्नी की नौकरी से शुरुआत की। इसके बाद वह 2004 से 2011 तक सैन फ्रैंसिस्को में डिस्ट्रिक्ट एटॉर्नी भी रहीं। डिस्ट्रिक्ट एटॉर्नी के रूप में उनके काम को पूरे अमेरिका में खूब सराहा गया।

2017 में कमला ने पहली बार कैलिफोर्निया से सीनेट का चुनाव लड़ा। अपने अच्छे कामों के कारण वह चुनाव जीतकर सीनेटर बन गईं।

जब 2020 चुनाव के लिए जो बाइडेन राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बने, तो उन्होंने कमला हैरिस को अपने साथ उपराष्ट्रपति पद के लिए चुना। राष्ट्रपति पद के चुनाव में जो बाइडेन ने तत्कालीन राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रम्प को हराया और इसके साथ ही तय हो गया कि 20 जनवरी 2021 को जब बाइडेन राष्ट्रपति पद की शपथ लेंगे, तो साथ ही अमेरिका को कमला हैरिस के रूप में पहली बार एक महिला के साथ-साथ एक अश्वेत उपराष्ट्रपति मिलेगा।

कमला हैरिस ने 2014 में डग एम्हौफ से शादी की है।

विराट कोहली
बचपन से बुलंदियों तक

विराट कोहली के दिल के बहुत करीब है, पश्चिम विहार की एलआईसी कॉलोनी। यहां अब वे कभी आते हैं, तो मानो उनके साथ बचपन की तमाम यादें भी आ जाती हैं। विराट कोहली के पापा प्रेम कोहली ने यहां के जी ब्लॉक में घर खरीदा था। इधर ही विराट का बचपन बीता और वे क्रिकेट के सुपर स्टार बने। यहां पर रहते हुए वे अपने दोस्तों के साथ पश्चिम विहार की एच-9, ज्वालाहेड़ी मार्केट या फिर राजौरी गॉर्डन में तफरीह के लिए जाते थे। एलआईसी कॉलोनी वालों के लिए विराट अब भी कोहली साहब दा मुंडा ही है। यहीं रहते हुए विराट को 2011 की वर्ल्ड कप टीम में लिया गया था। वर्ल्ड कप जीतकर वापस घर आया, तो हर रोज एलआईसी कॉलोनी के दोस्तों और बच्चों के साथ मस्ती करने लगा। विराट कोहली अब देश के सुपर स्टार हैं। कुछ साल पहले उन्होंने एलआईसी कॉलोनी से गुरुग्राम में घर शिफ्ट भी कर लिया। एलआईसी कॉलोनी के घर में विराट कोहली की मम्मी, बड़ा भाई विकास और भाभी भी रहते थे। बहन भावना की शादी हो चुकी है। विराट कोहली के पड़ोसी आरुष गुलाटी बताते हैं कि विराट बड़े भाई को 'वीर जी' ही कहते हैं। उसके लिए वीर जी पितातुल्यहै। विराट के पिता का पहले ही निधन हो गया था। तब विराट की मम्मी सरोज जी ने अपनी गृहस्थी को संभाला था। सरोज की इमेज एक धार्मिक-कर्मकांडी महिला की है। किसीा मैच में विराट बेहतरीन प्रदर्शन करता, तो वह पड़ोसियों को अवश्य मिठाई बांटा करती थीं। वह जब तक यहां पर रहा, तो इधर के किसी अंकल जी या आंटी जी के चरण स्पर्श करने से कभी पीछे नहीं हटा।

कैसे हो गया था विराट इतना गुस्सैल?

कुछ साल पहले तक विराट कोहली की शख्सियत का एक श्याम पक्ष उसका मैदान के अंदर और बाहर बेहद एग्रेसिव होना भी था। एक बार आस्ट्रेलिया दौरे के दौरान उसके गुस्से के शिकार एक अंग्रेजी अखबार का पत्रकार हुआ था। तब कोहली ने उसे हिंदी-पंजाबी में चुनिंदा गालियां दी थीं। कोहली इतना एग्रेसिव कैसे हो गया था,

ये एलआईसी कॉलोनी वालों को कभी समझ नहीं आया। जैसा कि नाम से ही साफ है कि एलआईसी कॉलोनी को भारतीय जीवन बीमा निगम में काम करने वालों ने बनाया था। इसमें 239 घर हैं। इधर अभी भी सामाजिकता बची हुई है।

विराट कोहली अब देश की सरहदों को पार करके दुनिया के शिखर पर हैं। चीकू विराट का प्यार का नाम है। वह क्रिकेट और ब्रांड की दुनिया का बादशाह हैं। विराट कोहली स्मार्ट और हैंडसम हैं। उनमें सुपर स्टार बनने के गुण पहले से ही थे। वे शरीर में टैटू बनवाना पसंद करते हैं। फिर क्रिकेट में तो अब उनसे बड़ा कोई सितारा दूर-दूर तक नहीं है। इसलिए बड़े ब्रांड उनसे जुड़ने के लिए बेकरार रहते हैं। विराट कोहली ने अपना पहला एड कैम्पेन 2010 में किया था। फास्ट्रैक का ये कैम्पेन उन्होंने अभिनेत्री जिनिलिया डिसूजा के साथ किया था। वो डील थी सिर्फ 25 लाख की और आज कोहली 4 करोड़ रुपये रोज के हिसाब से लेते हैं किसी ब्रांड के विज्ञापन के लिए। एक बार एड गुरु प्रसून जोशी कह रहे थे कि विराट का क्रिकेट करियर और विराट बतौर एक ब्रांड एंबेसेडर सचिन और धोनी से भी ज्यादा तेजी से बढ़ रहे हैं।

सामाजिक सरोकार

आप ये नहीं कह सकते कि विराट कोहली पैसे कमाने के लिए किसी भी उत्पाद को प्रमोट करने लगते हैं। विराट कोहली ने खुद को सामाजिक सरोकार से जोड़ते हुए शीतल पेय पदार्थ पेप्सी और गोरा बनाने वाली एक उत्पाद के प्रचार करने से मना कर दिया। विराट के मुताबिक ये उत्पाद जंक फूड और नस्लवाद को बढ़ावा देते हैं। वे मानते हैं कि वह सिर्फ उन्हीं उत्पादों का प्रचार करेंगे, जिससे वह खुद को जोड़ सकें, जिसका इस्तेमाल वह खुद कर सकें।

अपने लेखक को जानिए

विवेक शुक्ला : लगभग 35 वर्षों से मीडिया में सक्रिय। चोटी के मीडिया संस्थानों में वरिष्ठ पदों पर रहे। गांधीजी, दिल्ली, आर्किटेक्चर, प्रवासी भारती, खेल आदि पर लगातार हिन्दी और अंग्रेजी में लेखन। अब तक देश-विदेश के प्रमुख प्रकाशनों में दस हजार से अधिक लेख, इंटरव्यू, यात्रा वृत्तांत आदि प्रकाशित।

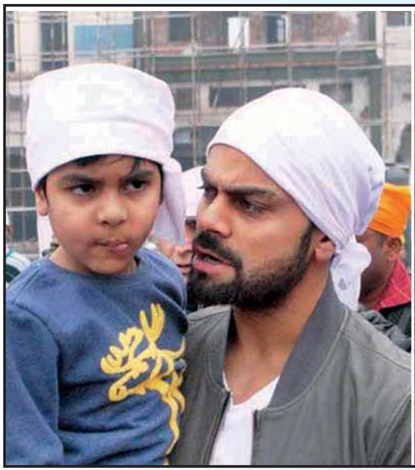

कुछ साल तक उन्होंने पेप्सी का प्रचार किया भी था। पर बाद में उन्हें लगा कि वह ऐसे उत्पाद का सेवन करने के लिए नहीं कह सकते, जो वह खुद नहीं लेते है। विराट गोरा बनाने का दावा करने वाली फेयरनेस क्रीम का भी विज्ञापन अब नहीं करेगे। उन्होंने कहा है कि वह अब इस विचार को बढ़ावा देंगे कि किसी का सम्मान उसके गुणों और मेहनत के बल पर बढ़ता है न कि त्वचा के गोरेपन से। यानी विराट ने अपने ब्रांड सेलेक्शन पर भी ध्यान दिया है और समय के साथ खुद को बदला है। विराट को कई कैटेगरीज जैसे अंडरगारमेंट्स और पान मसाला के ब्रांड्स ने एंबैसेडर बनाना चाहा लेकिन उन्होंने साफ इनकार किया।

बंदा है बिंदास

आप विराट कोहली में पंजाबी मुंडों वाली मस्ती को देखेंगे। विराट कोहली हर बात बिंदास अंदाज में कहते और करते हैं। और जहां तक उनके शरीर पर गुदे टैटूज का सवाल है, तो उनकी शख्सियत का आईना है। उनकी राशि स्कोर्पिओ है। इसलिए उन्होंने स्कोर्पिओ के निशान वाला टैटू अपने सीधे हाथ पर बनवाया हुआ है। कोहली के बायें हाथ पर एक योद्धा तलवार लेकर खड़ा दिखाई देता है। यह समुरई योद्धा है। इनका संबंध जापान से माना जाता है। टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली ने एक बार कहा भी था, "मुझे टैटू गुदवाना पसंद है और मेरे टैटू मेरी पर्सनेल्टी को बयां करते हैं।"

समुरई योद्धाओं के संबंध में कहा जाता है कि ये अपने बॉस के प्रति गहरी निष्ठा रखते हैं। इनके जीवन में अनुशासन का बहुत मतलब है। विराट कोहली भी किसी समुरई योद्धा से कम तो नहीं हैं। वह मैदान रूपी जंग के मैदान में पूरे जोश और बैखौफ अंदाज के साथ उतरते और लड़ते हैं।

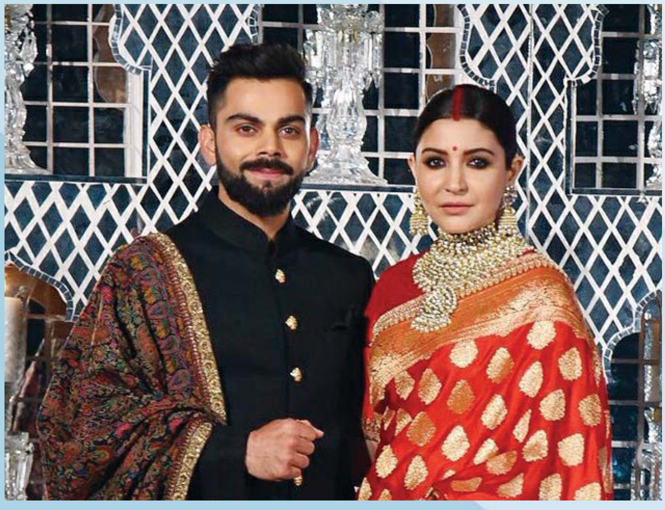

आइवर यूशिएल

जीव-जंतुओं का अद्भुत संसार

फ्लाइंग फॉक्स

चमगादड़ दुनिया का एकमात्र उड़ने में सक्षम मैम्मल है। दुनिया का विशालतम चमगादड़ है फ्लाइंग फॉक्स। इसका फैलाव दो मीटर तक होता है।

थ्रेशर शॉर्क

थ्रैसर शार्क जल में तैरते हुए जल को अपनी पूंछ से जोरों से पीटती है। विशेषज्ञों का कहना है इस तरह यह अपने आसपास की मछलियों को हड़बड़ा देती है। इस कारण वे आसानी से थ्रैसर शॉर्क का शिकार बन जाती है।

ब्राउटो

ब्राउटो एक विशिष्ट डॉल्फिन है। यह केवल दक्षिण अमेरिका की प्रमुख नदी अमेजॉन में ही पाई जाती है

एलिफेंट सील

एलीफेंट सील के शरीर में मौजूद तेल की वजह से इनका इतना शिकार हुआ कि एक समय इनकी तादाद घटकर 100 तक रह गई और यह लुप्त होने की कगार पर पहुंच गई। परंतु संरक्षण मिलने के बाद एलीफेंट सील की संख्या बढ़ी और अब ये पचास हजार से से ज्यादा है।

पफिन

पफिन पक्षी खड़ी चट्टानों का अपना घोंसला बनाता है। इसकी मादा वर्ष में केवल एक अंडा देती है

मजे टिम्मू के

टिम्मू ने बहुत मिन्नतें कीं, बहुत गिड़गिड़ाया, रोया, चिल्लाया, लेकिन रंग-रंगीला बैट, विकेट और बॉल लेकर खेलने जा रहे दोनों बच्चों ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। जब वे खेलने लगे, तब भी टिम्मू ने बहुत चिल्ला-चिल्लाकर उनसे विनती की, लेकिन तब भी उन्होंने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया।

तभी चौकीदार आया और टिम्मू को थप्पड़ दिखाते हुए बहुत तेज आवाज में डांटते हुए कहा, "चुपचाप बैठो!"

बेचारा टिम्मू उदास आंखों से उन बच्चों को खेलते हुए देखने लगा। बीच-बीच में उसकी सिसकी निकल जाती थी, पर डर के मारे वह चिल्लाया नहीं। अगर चिल्लाता, तो चौकीदार उसे संटी से मारने को कहता।

तभी सौम्या दीदी आ गई। दीदी को देखते ही वह चिल्ला-चिल्लाकर, रो-रोकर अपनी बोली में उनसे सारी बातें बताने लगा। वह इतना तो समझ गई कि टिम्मू बच्चों के साथ खेलना चाहता है, पर चौकीदार द्वारा उसे मारने की धमकी देने वाली बात उसकी समझ में नहीं आई।

उसने टिम्मू को खोला और उसके साथ खेलने लगी। वह उस बरातघर के पीछे ही रहती थी, जहां टिम्मू को बिना किसी जुर्म के कैद करके रखा गया था।

सौम्या दीदी उन बच्चों के ही स्कूल में कक्षा आठ में पढ़ती थी। जब से उसने नन्हे टिम्मू को देखा था, वह उसके साथ खेलने चली आती थीं। टिम्मू उसे देखते ही खुश हो जाता था और उसकी गोद में जाने के लिए मचलने लगता था।

एक दिन जब सौम्या दीदी टिम्मू के साथ खेलने के लिए आ रही थी, तो उसने दूर से ही देखा कि चौकीदार उसे मारने के लिए जूता उठा रहा है और वह डर के मारे चिल्ला रहा है। उसे डराने का कारण केवल यह था कि वह 'पेडिग्री' नहीं खा रहा था। चौकीदार जबरदस्ती उसका मुंह खोलकर उसके मुंह में 'पेडिग्री' डालकर उसके नन्हे से कोमल मुंह को अपने

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

बड़े-बड़े मजबूत हाथों से दबा देता था। बेचारा टिम्मू कूं-कूं करके रोता, मजबूर होकर मुंह खोलता और 'पेडिग्री' के गुटके गटक जाता।

सौम्या ने चौकीदार को समझाया, "यह नन्हा-सा पिल्ला है। इसकी मां से छीनकर इसे यहां इतनी दूर लाया गया है। इसको हमेशा बांधकर रखा जाता है। यह अभी इतना समझदार नहीं हुआ है कि आपकी सारी बातें मान ले। इसलिए आप इसे मारा मत कीजिए।"

चौकीदार टिम्मू से बहुत खिसियाता था, क्योंकि उसके आने से उसका काम बढ़ गया था। वह गुस्सा होते हुए बोला, "यह पिल्ला बहुत गंदा है। यह मेरी बात नहीं मानता है। मैं इससे बहुत परेशान हूं। यह 'पेडिग्री' नहीं खाता है। इसलिए आज मैंने इसे और कुछ खाने को नहीं दिया है। दूध भी पीने को नहीं दिया।"

यह सब सुनकर दीदी को बहुत बुरा लगा। उसने कहा, "तुरंत इसे ब्रेड डालकर दूध पिलाओ। नहीं तो मैं इसके मालिक से शिकायत कर दूंगी।"

तब जाकर चौकीदार ने टिम्मू को दूध दिया। वह एक ही बार में लप-लप करके कटोरी का सारा दूध पी गया।

इसके बाद सौम्या दीदी उसके साथ कुछ देर खेलती रही और फिर उसको टाटा, बाय-बाय करके चली गई। पर उसके दिमाग में यह बात हर समय खटकती रही कि उसके आने के बाद चौकीदार टिम्मू को कहीं मार न रहा हो।

असली टिम्मू

एक दिन सौम्या टिम्मू के साथ खेलने के लिए ज्यों ही बरातघर पहुंची, तो चौकीदार बोला, "आज मुझे किसी काम से बाजार जाना है। यहां कोई और भी नहीं है, जो टिम्मू को संभाल ले। क्या तुम मेरे वापस लौटने तक इसे अपने पास रख सकती हो?"

सौम्या को और क्या चाहिए था? वह खुश होते हुए तुरंत बोली, "ठीक है, तो मैं इसे अपने घर ले जाती हूं। आप वापस आने पर इसे ले जाना।"

दीदी ने जैसे ही टिम्मू को उसका नाम लेकर बुलाया, वह फुदकता हुआ आया और कूदकर उसकी गोद में चढ़ गया। दीदी खुशी के मारे दौड़ती हुई उसे लेकर अपने घर आ गई।

घर आकर उन्होंने जैसे ही टिम्मू को आंगन में छोड़ा, उसके दोनों मेमने भागते हुए आए और उसे अपने साथ खेलने के लिए कहने लगे। बतख ने टिम्मू की पूंछ पकड़कर खींची और मुर्गी ने उसके कान में चोंच से गुदगुदी मचा दी। बतख और मुर्गी के चूजे तो कूदकर उसकी पीठ पर बैठ गए। टिम्मू ने भी गोल-गोल चक्कर लगाते हुए दौड़ लगाई और उन सबके साथ खेलने लगा।

"वाह! तुम्हारे तो मजे आ गए।" सौम्या दीदी ने ताली बजाते हुए जोर से कहा। उसे बहुत खुशी हो रही थी।

खुशियां मनाते कब तीन घंटे बीत गए, पता ही नहीं चला। अचानक चौकीदार की आवाज ने उन सबका ध्यान भंग कर दिया। वह दरवाजे पर खड़ा सौम्या को बुला रहा था। उसे देखते ही टिम्मू सहम गया और एक मेमने के पीछे छुप गया।

चौकीदार, जो आवाज देने से पहले एकटक टिम्मू की मस्ती देख रहा था, उसे बहुत बुरा लगा। उसे तब और भी बुरा लगा, जब टिम्मू सौम्या दीदी की गोद से उसके हाथों में आने को तैयार नहीं हुआ और रोने लगा।

तब दीदी ने चौकीदार से कहा, "अब आपकी समझ में आया? यह आपके पास क्यों नहीं आ रहा?"

चौकीदार अपने हाथ आगे करके टिम्मू को पुचकारते हुए बोला, "आ जाओ, टिम्मू! अब मैं तुम्हें बहुत प्यार से रखूंगा। मारने की बात तो बिल्कुल भी नहीं करूंगा।" ❀

अपने लेखक को जानिए

रावेंद्रकुमार रवि : शिक्षक होने के साथ-साथ लेखन कार्य में निरंतर तीन दशक से सक्रिय। हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार 2018 से सम्मानित। बालमन तक पहुंचने की महक इनकी रचनाओं में विद्यमान रहती है। मुख्य रूप से बच्चों के लिए तथा बालिकाओं की खुशी के लिए विशेष लेखन।

हंसना जरूरी है

एक गप्पू पैराशूट बेच रहा था...
"हवाई जहाज से कूदो, बटन दबाओ और जमीन पर सुरक्षित पहुंच जाओ..."
ग्राहक, "अगर पैराशूट नहीं खुला तो... ?"
गप्पू, "तो पैसे वापस कर दूंगा...।"

एक औरत ने ट्रैफिक सिग्नल तोड़ दिया।
पुलिसवाला, "रुको..."
औरत, "मुझे जाने दो, मैं एक टीचर हूं।"
पुलिसवाला, "आहा, इस दिन का मैं कई सालों से इंतजार कर रहा था। चलो...., अब...सौ बार लिखो..., मैं कभी ट्रैफिक सिग्नल नहीं तोड़ूंगी!"

मरीज डॉक्टर के पास गया। बड़ी मासूमियत से बोला, "डॉक्टर साहब मैंने टेस्ट करा लिया है।"
डॉक्टर ने पूछा, " पहले ये बताओ, कौन सा ग्रुप है आपका ?"
मरीज, "आप भी ज्वाइन करेंगे ? मेरा ग्रुप है, नादान परिंदे।"
डॉक्टर गुस्से से, "मैं ब्लड ग्रुप पूछ रहा हूं, व्हाट्सएप ग्रुप नहीं...।"

एक बच्चा स्प्रे मार-मारकर थक गया। पर मच्छर कम नहीं हुए।
वह अपने बेड पर मच्छरदानी लगाकर लेटा, तो उसकी मच्छरदानी में एक छेद था।
मच्छर बार-बार उसके अंदर घुस जाते थे।
बच्चा परेशान हो गया। फिर उसने मच्छरदानी में एक छेद और किया।
फिर आर-पार उन दोनों छेदों में पाइप डाल दिया।
अब सारे मच्छर परेशान थे। वे एक तरफ से घुसते और दूसरी तरफ से निकल जाते।

परीक्षा में एक छात्र कॉपी पर फूल बना रहा था।
टीचर, "यह क्या कर रहे हो ? फूल क्यों बना रहे हो ?"
छात्र, "सर, यह फूल मेरी याददाश्त को समर्पित है, जो अभी-अभी गुजर गई...।"

पिता, "बेटा, दो बिस्तर क्यों लगाए... ?"
बेटा, "घर पर दो मेहमान आने वाले हैं...।"
पिता, "कौन-कौन... ?"
बेटा, "मम्मी के भाई और मेरे मामा...।"
पिता, " एक और लगा, मेरा साला भी आ रहा है...।"

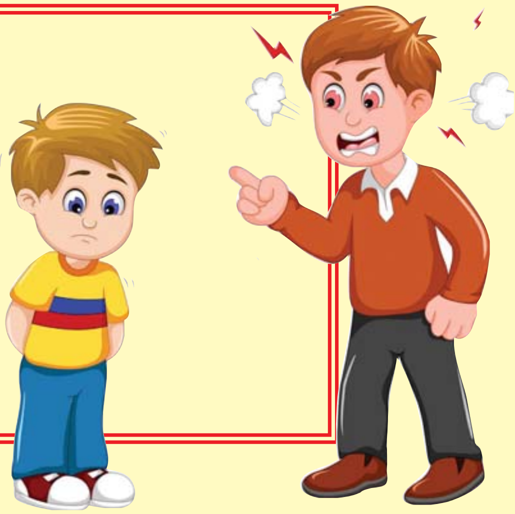

नए साल में मस्त गेम
पंकज रॉय
बूम...बूम...
बूम...बूम...
बूम...बूम...
रुक क्यों गए? नए साल पर इस खेल में कितना मजा आ रहा था।
मेरी गोलियां खत्म हो गईं हैं। मेरा मतलब है, मेरा गला खराब हो गया है।
!!

भूत था क्या

"माही, भूत है, भूत!" सिया चीखी।

सिया के पिता रवि ने बिजली जला दी। उनकी पत्नी कमला भी जाग गईं। माही आंखें मींचते हुए बोली, "दीदी, आपको हर जगह भूत ही दिखाई देता है। इस डर को निकालो।"

रवि ने हंसते हुए सिया की तरफदारी की, "हमारी बेटी बहादुर है। अरे! कोई सपना देखा होगा। चलो, सो जाओ।"

कमला ने भी सिया का हौसला बढ़ाया, "मन में डर बैठ गया है। कोई बात नहीं। यह डर धीरे-धीरे निकल जाएगा।"

फिर एक शाम की बात है। कमला और रवि तैयार हो रहे थे। सिया ने पूछा, तो कमला ने बताया, "एक शादी है। हम रात दस बजे तक लौट आएंगे। माही का ध्यान रखना।"

माही बीच में बोल पड़ी, "दीदी मेरा ध्यान रखेंगी? खिड़की के परदे हिलते हैं, तो उन्हें भूत नजर आने लगता है।"

रवि ने माही को आंखें दिखाईं। कहा, "ऐसा नहीं कहते। वह तुम्हारी दीदी है। मम्मी का मोबाइल घर पर ही रहेगा। हम बार-बार फोन करते रहेंगे। दरवाजा ठीक से बंद कर लेना।"

कमला को जैसे कुछ याद आया, "मैं खाना बनाकर जा रही हूं। भूख लगे, तो खा लेना। लौटकर तुम्हारे लिए हलवा भी बनाऊंगी। ठीक है।"

रवि और कमला के जाते ही सिया ने दरवाजा बंद कर दिया। माही ने पूछा, "दीदी, अब शाम के बाद क्या होगा?"

सिया ने जवाब दिया, "अंधेरा!"

"फिर?"

"रात होगी। तो?"

"रात, काली रात! भयंकर काली रात!"

"अच्छा! आज कुछ खास है?"

"है न! मम्मी-पापा घर में जो नहीं है।"

"पता है! लेकिन याद रख। वे दस बजे लौट आएंगे।"

"हां! पर कुछ भी हो सकता है।"

"मतलब?"

"मतलब यह कि सड़क पर जाम लग सकता है। पापा की गाड़ी खराब हो सकती है। खान अंकल के घर आने वाली बरात शाहदरा से ही देर से चले।"

"तो?"

"तो, ये कि दस की जगह बारह बज जाएं।"

"तो?"

"तो, बारह बजे का समय भूतों का होता है।"

"क्या बकवास कर रही है! तू मुझे डरा रही है?"

तभी 'घरररर-घरररररर-घररररर' की आवाज सुनकर सिया ने माही की ओर देखा। माही ने मोबाइल की ओर इशारा किया। मोबाइल वाइब्रेट कर रहा था। सिया ने बात की। माही ने पूछा, "पापा का फोन था न? मम्मी-पापा देर से आएंगे? है न?"

सिया ने सिर हिलाकर कहा, "हां। चल रसोई में। गरम-गरम खाना खा लेते हैं। फिर सो जाते हैं।"

माही ने पूछा, "इतनी जल्दी?"

सिया ने दांत दबाते हुए जवाब दिया, "हां, इतनी जल्दी। पापा ने कहा है।"

सिया ने माही का हाथ पकड़ा और

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

रसोई में ले गई। दोनों ने खाना खाया और बिस्तर पर लेट गए। माही बोली, “मुझे तो नींद आ रही है। आप दरवाजा खोलने चली जाओगी न?”

सिया बोली,“हां-हां। मैं चली जाऊंगी। मैं क्या डरती हूं?”

माही ने अपना चेहरा डरावना बनाया और बनावटी आवाज में कहा, “डरे हुए को कौन डराता है!” यह कहकर वह मुंह ढांपकर सो गई। सिया घड़ी देखती हुई बुदबुदाई, “दस बज चुके हैं। नींद भी नहीं आ रही।”

तभी ‘घररररर-घरररररर-घररररर’ की आवाज आई। सिया चीखी, “माही, भूत!”

माही ने चादर हटाते हुए कहा, “दीदी, कहा न, भूत नहीं होते। मोबाइल वाइब्रेशन में है। मम्मी या पापा होंगे।”

सिया ने तकिया हटाया। मोबाइल ही बज रहा था। “क्या कह रही है मम्मी?” माही ने चादर में मुंह घुसाते हुए पूछा।

सिया ने जवाब दिया, “मम्मी-पापा वापस लौट रहे हैं। लेकिन सड़क पर जाम है। देर हो जाएगी।”

तभी बाहर से आवाज आई। छस-छस-छस, खर-खरखर-छस्सस्सस! सिया ने फिर चादर खींची। माही उठकर बैठ गई। कहने लगी, “दीदी। कितनी बार कहूं। भूत नहीं होते।”

आवाज फिर आई। सिया ने बाहर की ओर इशारा किया, “सुनो। भूत है।”

माही बोली, “तो चलो, आज भूत से मिल ही लेते हैं!”

“पर, मुझे डर लग रहा है!”

“डर कैसा! हम दो हैं। मोबाइल पर टॉर्च है। चाहो, तो आप मोबाइल अपने पास रखना। चलो।”

आवाज अब भी रुक-रुककर आ रही थी। आगे-आगे माही चलने लगी। माही के पीछे सिया चल रही थी। तभी माही के मुंह से निकला, “ओह! मेरा चश्मा गिर गया। रोशनी दिखाओ।”

सिया ने रोशनी दिखाई, तो माही ने चश्मा उठा लिया।

तभी ‘धम्म’ की आवाज आई। सिया ने माही का हाथ कसकर पकड़ लिया। बोली, “ओह! भूत!” माही ने सिया के हाथ से मोबाइल ले लिया। टॉर्च की रोशनी उस ओर

अपने लेखक को जानिए

मनोहर चमोली ‘मनु’ : शिक्षक होने के साथ-साथ बाल साहित्य में सक्रिय। कई कहानियों का भारतीय सहित कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। कई पाठ्य पुस्तकों में कहानियां शामिल हैं। शिक्षा और साहित्य में आलोचना के लिए जाने जाते हैं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

की, जहां से धम्म की आवाज आई।

माही बोली, “क्या दीदी। देखो, बंदर। हमारी आहट सुनकर पेड़ से कूदा है। बेचारे की नींद भी खुल गई।”

छस-छस-छस, खर-खर-खर-छस्सस्सस की आवाज फिर आई। सिया ने डरकर कहा, “वापस चलो।”

माही ने धीरे से जवाब दिया, “नहीं। अब तो भूत से मिलकर ही जाएंगे।”

तभी सिया चिल्लाई, “बचाओ। भूत ने मेरा पैर पकड़ लिया!”

माही ने टॉर्च सिया के पैरों की ओर कर दी, “क्या दीदी, वह तो चूहा है!” अब आवाज नजदीक ही सुनाई दे रही थी।

माही ने फुसफुसाकर कहा, “अब हम बिल्कुल नजदीक आ गए हैं।”

सिया माही का हाथ पीछे की ओर खींचने लगी। आवाज और तेज हो गई, “छस-छस-छस, खर-खर-खरछस्सस्सस!”

माही फुसफुसाई, “दीदी, देखो। वो रहा भूत!”

सिया ने आंखें मीच लीं। माही ने सिया को झकझोरते हुए कहा, “दीदी। बंद आंखों से भूत नहीं दिखाई देता। वह देखो। तुम्हारा भूत।”

स्टोर के पीछे नल का पेंच ठीक से बंद नहीं था। टोंटी का पानी रबर के पाइप को हिला रहा था, जिससे आवाज आ रही थी। माही नल के पेंच को कसकर बंद कर बोली, “यह भूत अब भाग जाएगा।”

रबर के पाइप की हलचल भी अब बंद हो गई थी।

“भूत पकड़ा गया। अब वापस चलें?” माही ने पूछा, तो सिया ने हां में सिर हिला दिया। ❁

ऑपरेशन वाइरस

बीप...बीप...। आवाज सुनकर गहरी नींद में सोई शुभा ने हड़बड़ाकर आंखें खोल दीं।

"तुरंत हेडक्वार्टर पहुंचो...चीफ कॉलिंग...अर्जेंट।" अंगूठी के मोतीनुमा रिसीवर से वही परिचित आवाज सुनाई दी।

"कॉपी दैट...।" कहकर शुभा ने बटन दबाया और उछलकर खड़ी हो गई। शायद कोई नया केस।

सिर पर सुरक्षा हेलमेट पहनकर शुभा ने फुर्ती से कमर में एंटी ग्रैविटी बैल्ट बांधी। समय बहुत कम था। मम्मी-पापा आजकल बाहर गए हुए थे। रोबो सहायक को जरूरी निर्देश देने के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक थर्मोकंट्रोल जैकेट पहनती हुई वह बाहर बालकनी में आ गई।

बालकनी के बाहर वही पुराना दृश्य था। आसमान में उड़ते वायुयान, तरह-तरह की गाड़ियां और यात्री दिखाई दे रहे थे। ये सभी अलग-अलग ऊंचाइयों पर निश्चित लेन में उड़ते थे ताकि दुर्घटना की आशंका न रहे। हवाई ट्रैफिक पुलिस मुस्तैदी से अपना काम कर रही थी। कहीं भी जाम नहीं लगा था। नीचे बंद ट्यूबों में सुपर स्पीड हाइपरलूप ट्रेने दौड़ रही थीं। शुभा ने बैल्ट में लगा नेविगेटर चालू कर दिया। बालकनी के टेक ऑफ पॉइंट से छलांग लगाने के बाद वह हवा में तैरने लगी।

इस तरह यात्रा करना शुभा को हमेशा पसंद था। उसने गहरी सांस भरी। इतनी गाड़ियां होने पर भी हवा स्वच्छ थी। वायु प्रदूषण अब पिछले जमाने की बात हो चुकी थी। मई 2218 का यह हलका गर्म और खुशनुमा सा दिन था।

उगते सूरज का लाल रंग आसमान में घुलने

चित्र : इंदिरा

अपने लेखक को जानिए

कल्पना कुलश्रेष्ठ : शिक्षक होने के साथ-साथ साहित्यकार। 27 सालों से लेखन में सक्रिय। विज्ञान कथाओं के लिए प्रसिद्ध। हर बड़ी पत्रिका में कहानियां प्रकाशित। कई कहानियों का भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हुआ। 'उस सदी की बात' और 'भविष्य की सैर' सहित कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

लगा था। बीस मिनट की यात्रा के बाद हवा में विशाल सुनहरा गुब्बारा तैरता दिखाई दिया, जो असल में हेडक्वार्टर की इमारत थी। पास पहुंचकर शुभा ने अपनी दोनों हथेलियां सतह पर जमा दीं। पहले की तरह ही डेटाबेस से हाथों के प्रिंट का मिलान होते ही दरवाजा खुल गया। बैल्ट का स्विच बंद करते हुए वह अंदर आ गई।

बड़े हॉल में रखी मेज के दोनों ओर की कुर्सियों पर शुभा की उम्र के चार बच्चे बैठे थे, जिनमें से दो को वह नहीं पहचानती थी। उन दोनों के साथ शुभा के पुराने साथी टीना और इगोर भी साथ थे। मेज के सिरे की ओर बड़ा सा मास्क लगाए चीफ बैठे थे। उनका चेहरा आज तक किसी ने नहीं देखा था। चीफ को सैल्यूट करने के बाद वह भी एक कुर्सी पर बैठ गई।

"टाइम गश्ती गैंग के नए सदस्य रिया और शुभम से मिलिए। आपकी ही तरह कड़े परीक्षणों के बाद इनकी भर्ती की गई है।"

"हैलो...।" सबने एक-दूसरे का अभिवादन किया। टाइम गश्ती गैंग एक गुप्त संगठन था। यह समय अंतराल में गश्त लगाता और जांच पड़ताल करता था। बारह से सोलह वर्ष के बच्चे इसके सदस्य बनाए जाते थे। जीव वैज्ञानिकों के अनुसार हर नई पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी से अधिक बुद्धिमान होती है। पूर्वाग्रह से रहित, जिज्ञासु और कल्पनाशील होने के कारण वे अच्छे परिणाम देते हैं।

आज ऐसी टाइम मशीन बनाई जा चुकी थी, जो समय में दो घंटे आगे और दो घंटे पीछे तक जा सकती थी। दुनिया के गिने-चुने लोग ही इसके बारे में जानते थे। दरअसल आज भी आतंकवादी नए-नए तरीकों से आतंक फैलाने में लगे रहते थे। ऐसे में यह मशीन शांति और सुरक्षा बनाए रखने में बड़ी उपयोगी साबित हुई थी। हालांकि विज्ञान के नियमों के अनुसार भूतकाल की घटनाओं को बदलना असंभव था परंतु वर्तमान में रोकथाम के उपाय तो किए ही जा सकते थे। इस गैंग का पहला दस्ता 'बीइंग इन फ्यूचर' भविष्य की टोह लेता था तो दूसरा दस्ता 'बैक टू द पास्ट' भूतकाल में छानबीन करता था।

"आप सबको इतनी जल्दी दोबारा यहां बुलाने का कारण कुछ खास है। एक भयानक घटना होने वाली है, जिसे हम नहीं रोक पाए, तो दुनिया ठहर जाएगी। वैसे ही, जैसे दो सदी पहले ठहर गई थी।" चीफ की भारी आवाज में चिंता थी।

"हम कुछ समझे नहीं सर।"

"एक रहस्यमय कोरोना विषाणु ने लगभग दो सौ साल पहले लोगों को घरों में दुबकने को विवश कर दिया था। कोविड-19 के कारण दुनिया भर में लॉकडाउन लगाना पड़ा था, ताकि उस संक्रामक और खतरनाक विषाणु से बचा जा सके।" चीफ की बात से उन्हें याद आया कि अपनी इतिहास की किताबों में उन्होंने यह पढ़ा था।

"दो-तीन वर्षों में स्थिति सामान्य होने लगी। बाद में इस वाइरस के बारे में और अधिक जानने के लिए इसे अमेरिका के ग्रीनविले शहर की एक उच्च सुरक्षा लैब में रख दिया गया। लंबे समय तक इस पर शोध व अनुसंधान किए गए। यह पाया गया कि इसमें कुछ ऐसे आनुवांशिक बदलाव भी हो गए थे जिससे यह और अधिक घातक बन गया था।" चीफ ने बताया।

"हमारा बीइंग इन फ्यूचर दस्ता भविष्य की गश्त पर था। उनके रेटिना से जुड़े नैनो कैमरे ने कुछ तसवीरें रिकॉर्ड की हैं। जिससे पता लगा है कि दो घंटे बाद यह वाइरस वातावरण में फैल जाएगा। हम नहीं जानते कि यह कैसे हुआ। लेकिन इसे रोका न गया, तो करोड़ों लोग मारे जा सकते हैं। " चीफ की बात सुनकर वहां सन्नाटा छा गया।

"जाहिर सी बात है कि अमेरिका की लैब से वाइरस चुरा लिया गया होगा।" शुभा ने अनुमान लगाया।

"शायद ऐसा ही है। टीना, शुभा और इगोर आप तीनों एक टीम हैं। भूतकाल में जाकर आपको पता लगाना है कि यह वाइरस कहां है। रिया और शुभम यहां हमारे साथ काम करेंगे। आधा घंटा बीत चुका है। यानी अब से डेढ़ घंटे तक का समय हमारे पास है। उसके बाद वाइरस को रोकना असंभव होगा।"

"यस सर।" चीफ को सैल्यूट करते हुए वे तीनों टाइम

मशीन वाले कक्ष की ओर बढ़ गए।

पिछली बार की ही तरह दो घंटे पहले के टाइम स्पॉट पर वे तीनों तैनात हो चुके थे। लोगों की गहमागहमी के बीच उन्होंने ख़ुद को छुपा रखा था। अपने विशेष चश्मे उन्होंने आंखों पर लगा लिए थे। ये शक्तिशाली दूरबीन का काम करते थे। प्रयोगशाला के दोनों गेटों पर कड़ी सुरक्षा थी। आईडी की चैकिंग और शरीर की स्कैनिंग के बाद ही किसी को अंदर जाने दिया जाता था। गेट के बाहर कार छोड़कर अंदर जाना होता था। कार स्वयं ही पार्किंग एरिया में पहुंचकर खड़ी हो जाती थी।

एक घंटा बीतने को था और अभी तक उन्हें कुछ भी असामान्य नहीं दिखा था। तभी कार से उतरकर गेट की ओर आते एक व्यक्ति पर शुभा की दृष्टि ठहर गई। वह बेहद घबराया हुआ दिखाई दे रहा था। उसकी आंखें लाल थीं और चाल में लड़खड़ाहट। वह बेचैनी से इधर-उधर देख रहा था। उसके गले में लटके आई कार्ड पर 'डॉक्टर विल्सन, वरिष्ठ वैज्ञानिक' और उसका पता लिखा हुआ था। शुभा ने अंगूठी के स्पीकर को ऑन किया।

"टीना...इगोर, एक व्यक्ति संदिग्ध लग रहा है।"

"ठीक है, हम वहां पहुंचते हैं।" कुछ पल बाद इगोर और टीना भी वहीं पहुंच गए। उन्होंने ध्यान से देखा।

"तुम ठीक कह रही हो शुभा। लगता है जैसे डॉक्टर विल्सन अपने होशो हवास में नहीं हैं।" इगोर ने कहा।

स्कैनिंग कराने के बाद डॉक्टर विल्सन अंदर चले गए। वे तीनों आसपास घूमते हुए प्रतीक्षा करने लगे। लगभग पौन घंटे बाद डॉक्टर विल्सन बाहर आ गए।

"जल्दी जा रहे हैं साहब? तबीयत ठीक नहीं है क्या?" गार्ड ने पूछा।

डॉ. विल्सन ने बिना कुछ बोले हां में सिर हिलाया। गार्ड ने उनकी तलाशी ली। सब कुछ सामान्य पाए जाने पर वह गेट से बाहर निकलने लगे ताकि सड़क पर पहुंच चुकी अपनी कार में बैठ सकें।

तभी काला चश्मा लगाए छड़ी टेकता एक अंधा भिखारी कहीं से आकर उनसे टकराया और गिर पड़ा। डॉ. विल्सन ने उसे उठाने का उपक्रम किया। शुभा ने ध्यान से देखा, वह डॉ विल्सन के आगे हाथ फैला रहा था, शायद भीख मांगने के लिए। डॉक्टर विल्सन ने सावधानी से चारों ओर देखा और अपने मुंह में रखी एक सीलबंद नन्ही शीशी चुपके से निकालकर उसके हाथ में रख दी। तीनों थोड़ा पास पहुंचकर सुनने की कोशिश करने लगे।

"अब छोड़ दो हमें। चले जाओ हमारे घर से।" डॉ. विल्सन कह रहे थे।

"नहीं, हम तुम्हारे घर से ही ऑपरेट करेंगे। यह वाइरस हमारा हथियार है। इसी के दम पर हम सरकार से अपने साथियों को छुड़वाएंगे। यदि दो घंटे के भीतर हमारे साथी नहीं छोड़े गए, तो यह वाइरस हवा में फैला देंगे।"

"सरकार उन आतंकवादियों को कभी आजाद नहीं करेगी। बल्कि तुम सब मारे जाओगे।" डॉ. विल्सन कांप उठे।

"तो हम इस वाइरस को आजाद कर देंगे। यूं भी कुर्बानी देना हमारे लिए फख्र की बात है।" आतंकवादी ने कहा और डॉक्टर विल्सन का कंधा कसकर पकड़ते हुए कार की तरफ चल दिया। देखने वालों को लग रहा था जैसे डॉक्टर उसे सहारा देकर गाड़ी में बिठा रहे हों।

"सो नाइस ऑफ यू, मैन!" एक आदमी कहता हुआ निकल गया।

वे सब कुछ समझ गए थे। आतंकवादी डॉक्टर विल्सन के घरवालों को बंधक बनाकर उन्हें ब्लैकमेल कर रहे थे। सच उनके सामने था। काश, वे इसे यहीं रोक सकते। परंतु वे भूतकाल में थे। समय से छेड़छाड़ के भयंकर परिणाम हो सकते थे। यह नियम-कानूनों के विरुद्ध था। अब जो कुछ करना था, वर्तमान में ही करना था।

"जल्दी वापस चलो। अब हम जानते हैं कि वाइरस को कहां ढूंढ़ा जाए।" टीना बोली। उन्होंने एक साथ अपने हाथ में पहने डिवाइस का बटन दबा दिया और वापस उसी टाइम जोन में लौट आए जहां से वे गए थे।

"स्ट्रीट 908, पूह बीयर लेन, ग्रीनविले शहर, दक्षिणी कैरोलिना के फ्लैट नंबर 36 से फैलेगा यह वाइरस। इस समय वहीं पर मौजूद हैं आतंकवादी।" उन्होंने जल्दी-जल्दी सारी बात चीफ को बताई।

"बहुत बढ़िया, मैं अधिकारियों से संपर्क करता हूं। अब तुम लोग जा सकते हो। तुम्हारा काम खत्म।" चीफ बहुत व्यस्त हो गए।

वे उद्विग्न से बाहर आ गए। न जाने आगे क्या होने वाला था। शुभा ने उन दोनों को निमंत्रण दिया, "तुम दोनों भी मेरे घर चलो! कुछ देर बाद चले जाना। नाश्ता करेंगे और बातें भी।" इस समय वे भी शायद यही चाहते थे। तीनों शुभा के घर की ओर उड़ चले।

रोबो मेड ने बढ़िया सा नाश्ता बना रखा था। पर उनका मन खाने में नहीं था। वे बैठते-टहलते चीफ के फोन का इंतजार करने लगे। बड़ी मुश्किल से एक घंटा बीता।

बीप...बीप... आखिरकार फोन आ गया, "आपरेशन वाइरस पूरा हुआ। खतरा टल गया है।" चीफ की आवाज में शांति थी।

उन्होंने पूछा, "आतंकवादी कैसे पकड़ में आए सर?"

"ऐसे अनोखे तरीके से, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। मिस्टर विल्सन के फ्लैट के टॉयलेट की सीवर लाइन से एक विशेष गैस अंदर छोड़ी गई। यह हानिकारक नहीं थी, गैस फैलते ही सब लोग बेहोश हो गए। फिर कमांडोज दरवाजा तोड़कर अंदर घुस गए और आतंकवादियों को पकड़ लिया। वाइरस की वॉइल को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया गया है।"

"लेकिन सर आतंकवादी मिस्टर विल्सन के फ्लैट में घुसे कैसे?"

"वे कोरियर वाले बनकर घुसे थे। मिस्टर विल्सन ने कुछ फर्नीचर मंगवाया था। इसलिए उन्हें शक भी नहीं हुआ। आतंकवादियों ने उनके दोनों बच्चों और पत्नी को बंधक बना लिया।"

"लगता है, वे लंबे समय से मिस्टर विल्सन के पीछे लगे थे।" शुभा ने कहा।

"सही कहा। खबर गोपनीय है। दुनिया को पता भी नहीं चलेगा कि अभी-अभी वह कितने बड़े खतरे से बची है। तुमने दुनिया को बचा लिया है। शाबाश। अब अगला केस आने तक आराम करो।"

"थैंक्स चीफ।" कहकर तीनों नाश्ते पर टूट पड़े।

रिक्त स्थान भरो

यहां दिए गए वर्गों में बीच का स्थान रिक्त है। उसमें ऐसा उपयुक्त अक्षर या मात्रायुक्त अक्षर भरना है कि लंबाई या चौड़ाई में पढ़ने से सार्थक शब्द बन सकें।

प्रकाश तातेड़, उदयपुर (राजस्थान)

1.

X	सु	X
प्रे		णा
X	क्षा	X

2.

X	ए	X
सं		ल्प
X	ता	X

3.

X	व्या	X
उ		धि
X	र	X

4.

X	सा	X
बा		क
X	न	X

5.

X	नै	X
प्र		भा
X	क	X

6.

X	नि	X
व		न
X	य	X

पैटर्न पहचानो

पैटर्न समझकर तीसरे त्रिकोण में प्रश्नचिन्ह के स्थान भर संख्या भरो

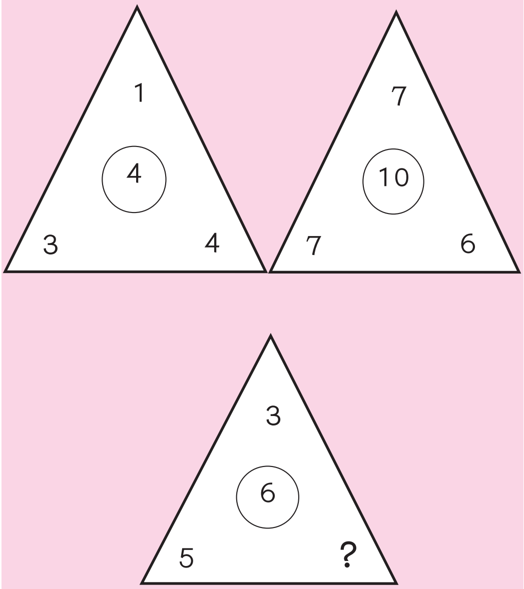

क. 3. ख. 4. ग. 5. घ 6.

शब्द भरो

हर वाक्य में दो रिक्त स्थान हैं, जिन्हें एक ही शब्द से भरना है।

1. उसका ..... चले, तो वह कभी भी ..... से यात्रा न करे।
2. सरदार जी ..... चलाकर .....सेवा में भाग लेने गए थे।
3. ..... इतना ..... था कि सब उसकी मासूमियत का फायदा उठाते थे।
4. प्रधान..... जी ने रमेश को राज्य..... बनाया।
5. शादी में.....-पीना शुरू होते ही राजेश ने ..... शुरू कर दिया।
6. हिल .... के लिए अमित दिल्ली के रेलवे .... से ट्रेन में परिवार सहित चढ़ा।
7. इस फिल्म के सारे ....., प्रसिद्ध .....कार योगेश ने लिखे थे।
8. 'बोल ......' फिल्म में छोटे ...... साहब ने काम किया है।
9. उसने बड़ी आत्मीयता से लाल किला घूमने आए उस ...... पर्यटक को ...... वाली चाय पीने को दी।
10. ....राम की .... को अब भुतहा मानकर कोई खरीदने को तैयार नहीं है।

सार्थक शब्द बनाओ

नीचे दिए 8 अक्षरों को भरकर सार्थक शब्द बनाएं

					B	
			A	L		
					O	S
	A		K			
C			E		K	A
		L	U	C	K	K

B A C L O
S K U

उत्तर

1 रिक्त स्थान भरो : सुरक्षा-प्रेरणा, संकल्प-एकता, उपाधि-व्यापार, साधन-बाधक, नैतिक-प्रतिभा, निर्णय-वर्णन

2. शब्द भरो : 1. बस, 2. कार, 3. भोला, 4. मंत्री, 5. खाना, 6. स्टेशन, 7. गीत 8. बच्चन, 9. चीनी, 10. हवेली

3. पैटर्न पहचानो : उत्तर 4. (हर त्रिकोण में बीच की संख्या तीनों कोणों की संख्या के जोड़ को 2 सा भाग करने पर निकला है।)

4. सार्थक शब्द बनाओ : BACK, BLOCK, CALL, ASK. CLUE, LUCK, SOAK

जरा बताओ तो...

1. भारत के पहले राष्ट्रपति कौन थे ?
क. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, ख. वी. डी. जत्ती, ग. डॉ. राजेंद्र प्रसाद, घ. नीलम संजीव रेड्डी

2. भारतीय टेस्ट क्रिकेट टीम के प्रथम कप्तान कौन थे ?
क. मंसूर अली खान पटौदी, ख. कर्नल सी. के. नायडू, ग. फारूख इंजीनियर, घ. लाला अमरनाथ

3. भारतीय सुप्रीम कोर्ट के पहले भारतीय मुख्य न्यायाधीश कौन थे ?
क. एच. जे. कानिया, ख. भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा, ग. सुधीरंजन दास, घ. एम. पतंजलि शास्त्री

4. शतरंज में विश्वचैंपियन बनने वाले प्रथम भारतीय खिलाड़ी कौन थे ?
क. दिव्येंदु बरुआ, ख. विश्वनाथन आनंद, ग. प्रवीण थिप्से, घ. पी. हरिकृष्णा

5. स्वतंत्र भारत के पहले भारतीय गवर्नर जनरल कौन थे ?
क. सी. राजगोपालाचारी, ख. लॉर्ड माउंटबेटन, ग. राजेश्वर राव, घ. राव वीरेंद्र सिंह

6. स्वतंत्र भारत में भारतीय सेना के पहले भारतीय कमांडर इन चीफ कौन थे ?
क. महाराज श्री राजेंद्र सिंह जी जडेजा, ख. के. एम. करियप्पा, ग. के. एस. थिमय्या, घ. प्रेमनाथ थापर

7. भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री कौन थीं ?
क. मायावती, ख. अनवरा तैमूर, ग. नंदिनी सत्पथि, घ. सुचेता कृपलानी

8. एवरेस्ट पर विजय पाने वाली प्रथम भारतीय महिला पर्वतारोही कौन थी ?
क. अरुणिमा सिंह, ख, बछेंद्री पाल, ग. संतोष यादव, घ. सुमन कुटियाल

उत्तर

जरा बताओ तो...

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद, 2. कर्नल सी. के. नायडू, 3. एच. जे. कानिया, 4. विश्वनाथन आनंद, 5. सी. राजगोपालाचारी, 6.. के. एम. करियप्पा, 7. सुचेता कृपलानी, 8. बछेंद्री पाल

वर्ग पहेली...

ऊपर से नीचे

2. यारी, 3. नागपुरी, 4. पुरी, 5. काजल, 7. रजामंदी, 9. खानसामा, 10. शानदार, 11. लगान, 12. पायल, 17. दस्त, 18. कमल, 19. नथ

दाएं से बाएं

1. लुधियाना, 4. पुस्तकालय, 6. खीर-पूरी, 8 दीदार, 13. नयन, 14. मदारी, 15. घनश्याम, 16. तरकीब, 20. मात, 21. बेगाना

वर्ग पहेली...

1. लु		2.	3. ना	15. घ	19.		म
14. म		री		17. द	थ		12.
			4. पु		5.		य
6.	7.	पू					ल
9. खा	जा	10. शा		18.	11. ल		
				21.		ना	
	8. दी				13. न		
20.	16. त						

ऊपर से नीचे

2. दोस्ती के लिए एक शब्द (2)
3. संतरों की एक वैरायटी को कहते हैं (4)
5. आंखों में कभी न कभी तुमने भी देखा होगा (3)
4. एक धार्मिक नगरी (2)
7. जब तुम मान जाते हो, तो उसे यह भी कहते हैं(4)
9. जो खाना बनाता है (4)
10. बेहतरीन के लिए हम यह भी कहते हैं (4)
11 क्रिकेट से जुड़ी एक फिल्म (3)
12. इसे पैरों में पहनते हैं (3)
17. जब पेट गड़बड़ हो जाता है, तो लगते हैं। (2)
18. कमल का एक और नाम (3)
19. इसे नाक में पहनते हैं(2)

दाएं से बाएं

1. गर्म कपड़ों के लिए मशहूर पंजाब का नगर (4)
4. यहां जाकर मजेदार कहानियां भी पढ़ सकते हैं (5)
6. खाने में बड़ा मजा आता है (4)
8. देखने के लिए यह भी शब्द कहा जाता है (3)
13. लालकिला देखने के लिए हमें इसकी जरूरत पड़ती है (3)
14. एक खास जानवर का खेल दिखाने वाला (3)
15. कृष्ण का एक नाम (4)
16 उपाय का एक और नाम (4)
20. शतरंज के खेल में जीत-हार में से हार के लिए यह शब्द भी प्रयोग में लाते हैं (2)
21. जो अपना नहीं होता, उसे यह भी कहते हैं (3)

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो

email : payasmagazine@gmail.com

whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है,दीप्ति मित्तल ने

अपेक्षा जायसवाल

रुद्रांश

लक्ष्य

अपेक्षा जायसवाल,
उम्र : 9 वर्ष,
कक्षा : चार,
डी.पी.एस, राजनगर गाजियाबाद

रुद्रांश,
उम्र : 10 वर्ष,
कक्षा : छह,
ऑक्सफोर्ड सीनियर सेकेंड्री स्कूल, दिल्ली

लक्ष्य,
उम्र : 12 वर्ष,
कक्षा : आठ,
केन्द्रीय विद्यालय, आर्मी एरिया, पुणे

स्वर्ण सूर्यांश

अनिकेत विश्वकर्मा

प्रथम पुरस्कार

आरोही मिश्रा

स्वर्ण सूर्यांश,
उम्र : 10 वर्ष,
कक्षा : चार,
सरला बिड़ला पब्लिक स्कूल, रांची

अनिकेत विश्वकर्मा,
उम्र : 12 वर्ष,
कक्षा : आठ,
केन्द्रीय विद्यालय, आर्मी एरिया, पुणे

आरोही मिश्रा
उम्र : 7 वर्ष,
कक्षा : एक,
मिस्पा मिशन हायर से. स्कूल, सिहोरा, जबलपुर

अनुभव चमोली

श्रावणी जोशी

वैष्णवी पांडे

अनुभव चमोली,
उम्र : 10 वर्ष,
कक्षा :पांच,
केन्द्रीय विद्यालय, पौड़ी
उत्तराखंड

श्रावणी जोशी,
उम्र : 11 वर्ष,
कक्षा : छह,
सेंट मैरीज कॉन्वेंट उ. मा. विद्यालय, उदयपुर

वैष्णवी पांडे
उम्र : 9 वर्ष,
कक्षा : पांच, सेंट अंथोनिज कॉन्वेंट गर्ल्स प्रा. स्कूल, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

लॉकडाउन में बना यूट्यूबर

स्पन्दन सेठी
उम्र : 12
कक्षा : छह
सेंट्रल अकादमी, जोधपुर

मैं स्पन्दन सेठी, सेंट्रल अकादमी जोधपुर में पढ़ता हूं। जैसे ही 5वीं कक्षा की परीक्षाएं समाप्त हुईं, तो मैं दादी के घर बीकानेर आ गया। 1 अप्रैल को मेरे स्कूल में नया सत्र चालू होना था। लेकिन उससे पहले लॉकडाउन हो गया।

कुछ दिन तो अच्छा लगा, लेकिन फिर ऑनलाइन क्लास शुरू हुई। फिर भी मेरा समय बच जाता था। मेरा क्रिकेट अकादमी जाना, स्कूल जाना सब बंद हो गया था। यहां तक कि पड़ोस के दोस्तों के साथ खेलना भी मना था। मैं बोर होने लगा था। मैं अपनी ऑनलाइन क्लास के बाद यूट्यूब देखने में ज्यादा समय बिताने लगा था। मेरी सारी एक्टिविटी खत्म सी होने लगी थी।

एक दिन मुझे विचार आया कि क्यों ना मैं ही यूट्यूब बनाऊं? फिर मैंने कुछ वीडियो बनाई और अपलोड कर दी। पर मेरी दीदी को वीडियो पसंद ही नहीं आई और उन्होंने चैनल से हटवा दिया।

सृष्टि दीदी ने मुझे वीडियो बनाने के एंगल बताए और मुझे ट्राइपॉड गिफ्ट किया। अब मैंने कुछ इंटरनेट पर पढ़ा, तो कुछ दीदी के आइडिया थे। मुझे ग्रीन पर्दे के बारे में पता चला कि इससे बैकग्राउंड बदला जा सकता है।

मैंने अपना चैनल 'स्पन्दन लर्निंग' के नाम से खोल लिया है। अब मैंने बहुत से वीडियो बना लिए हैं और उन्हें अपने चैनल पर अपलोड करता जा रहा हूं। अपनी दीदी के प्रोजेक्ट वीडियो भी एडिट करने लगा हूं। मेरी मम्मी भी मुझसे वीडियो एडिट करवाना चाहती हैं।

आपसे मेरा प्यार भरा आग्रह रहेगा कि आप मेरे चैनल को सब्सक्राइब कीजिए। आपके लाइक मेरा उत्साह बढ़ाएंगे। मेरे यूट्यूब चैनल का लिंक है :

https://www.youtube.com/channel/UCUt6Lih2UU00e_Xhwyrx_LQ

गणतंत्र दिवस

शोषण का युग खत्म हुआ,
कट गए दास्तां के बंधन!
अब नहीं किसी का भय हमको,
चाहे छू लें उन्मुक्त गगन!!

अब संविधान भी अपना है,
और शासन भी हम सबका!
देश की संपत्ति पर,
अधिकार है इसके पुत्रों का!!

अब धर्म, जाति, विश्वास सभी के,
सम आदर पाते हैं!
भोजन, कपड़ा, शिक्षा, न्याय का,
संरक्षण पाते हैं!!

अधिकारों की चाहत में,
अपना कर्त्तव्य न भूलें!
औरों को भी हक जीने का,
यह सिद्धांत न भूलें!!

गणतंत्र दिवस के इस अवसर पर,
हम मिलकर करें सभी यह प्रण!
यदि राष्ट्र पर संकट आए,
कर दें तन, मन, धन अर्पण!!

नियति चित्रांश,
उम्र : 8 वर्ष,
कक्षा : चार,
अर्वाचीन भारती भवन स्कूल, दिल्ली

तुम ना मुझे बर्बाद करो

हरे-भरे हैं वृक्ष धरा पर ,
भरे-भरे हैं ताल यहां पर ।
भूरा-सा है देह धरा का ,
नीला सा है शीश जहां का।

यह जो सारे अंग है मेरे ,
जीवन के आधार तुम्हारे।
छोटी सी है अनुनय मेरी,
तुम ना मुझे बर्बाद करो।
तुम ना मुझे बर्बाद करो।

मेरी ही तो रचना हो तुम,
मुझसे ही आधार तुम्हारा।
मैंने ही तो रचा संवारा,
मुझसे ही आकार तुम्हारा।
छोटी सी है विनती मेरी,
तुम ना मुझे बर्बाद करो।
तुम ना मुझे बर्बाद करो।

मैं चाहूं दीर्घायु तुम हो,
मैं चाहूं शतायु तुम हो।
मैं चाहूं खुशहाली तुम्हारी,
छोटी सी है विनय मेरी।
तुम ना मुझे बर्बाद करो,
तुम ना मुझे बर्बाद करो।

रुषिता वेदुला

रुषिता वेदुला
उम्र : 13 वर्ष,
कक्षा : नौ
डी.ए.वी पब्लिक स्कूल
झारसुगुड़ा , ओडिसा

2nd

मृगांक चमोली,
उम्र : 8 वर्ष,
कक्षा : तीन,
केन्द्रीय विद्यालय,
पौड़ी

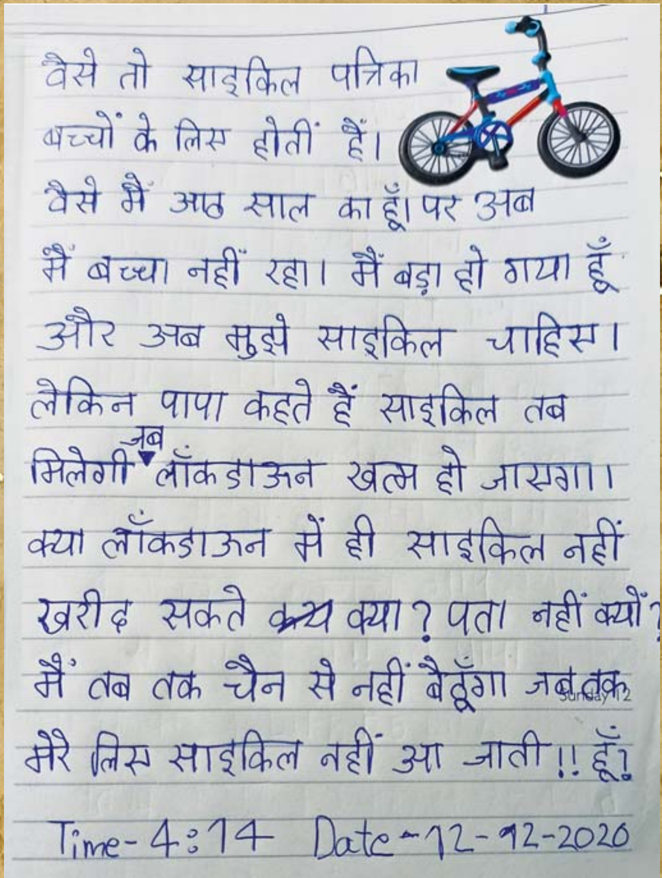
वैसे तो साइकिल पत्रिका
बच्चों के लिए होती हैं।
वैसे मैं आठ साल का हूँ। पर अब
मैं बच्चा नहीं रहा। मैं बड़ा हो गया हूँ
और अब मुझे साइकिल चाहिए।
लेकिन पापा कहते हैं साइकिल तब
मिलेगी जब लॉकडाउन खत्म हो जाएगा।
क्या लॉकडाउन में ही साइकिल नहीं
खरीद सकते क्या? पता नहीं क्यों?
मैं तब तक चैन से नहीं बैठूँगा जब तक
मेरे लिए साइकिल नहीं आ जाती!! हूं!
Time- 4:14 Date-12-12-2020

तृतीय पुरस्कार

छोटी जादूगरनी

"अरे वो महान जादूगरनी आ गई।" सभी शोर मचाते हुए बोले।

आप भी सोच रहे होंगे कि वह कौन है? वह एक छोटी-सी चिड़िया थी। उस जैसा जादू कोई नहीं कर सकता था।

सभी चिड़ियां पेड़ पर बैठकर उसे देखने लगीं, जो एक खिड़की पर आकर बैठ गई थी। उसकी चोंच रंग-बिरंगी थी, शरीर पीले, हरे और नीले रंग के पंखों से भरा था। वह सबसे अलग थी। ऐसे लग रहा था कि उसका शरीर पूरा कपड़े और गहनों से भरा था।

स्वागत के बाद, उसने अपना जादू दिखाना शुरू किया। खिड़की के छोटे से छेद से वह अंदर गई और बाहर आई। उड़कर बिना पत्तों को हिलाए पेड़ की सबसे ऊंची डाली पर जा बैठी। उसका जादू देखकर सभी चिड़ियां मोहित होकर तालियां बजाने लगीं।

अब एक चिड़िया बोली, "तुम्हारा यह जादू किस काम का? इसका उपयोग किसी को खुशी देने, किसी के जीवन में उमंग भरने में करो, तो सब तुम्हें याद रखेंगे।"

जादूगरनी चिड़िया की समझ में बात आ गई। पहले उसने उस घर की छोटी बच्ची को नाच दिखाकर खूब हंसाया। अपना काम खत्म होने के बाद उसने सोचा, "मैं अपना जादू किसी भी देश में जाकर भी दिखा सकती हू। ताकि वहां के लोग भी खुश रह सकें।" यह सोचकर वह खुशी से उड़ गई।

मधुनिशा घोष

ओ कोरोना, बस करो ना

ओ कोरोना, अब तो बस करो ना ,
बहुत याद आता है, अपनी शाला का जमाना।
सुबह-सुबह कतार में लगना ,
और जन गण मन गाना।
टीचर का कक्षा में आना,
और शोर मचाते छात्रों का शांत हो जाना।

कक्षा में गर्व से जवाब बताना,
और मैम के गुड कहने पर फूला ना समाना।
समय मिलते ही ऊपर चढ़-चढ़कर कूदना,
और धमाचौकड़ी मचाना।
शरारत कर टीचर से नजरें चुराना,
और पकड़े जाने पर डांट खाना ।
खेल के मैदान में दौड़-दौड़कर खेलना,
और जूते के फीते दोस्तों से बंधवाना।
मेरे दोस्तों का अंदाज मस्ताना,
छोटी-छोटी लड़ाइयों के बाद एक हो जाना ।
एक ही लंचबॉक्स में लूटपाट मचाना और
फिर बांटकर खाना, ऐसा है हमारा याराना,
सारी दुनिया से अनजाना,
मैं हूं मेरी शाला का दीवाना,
बहुत याद आता है मुझे शाला का जमाना।
ओ कोरोना, अब तो बस करो ना।

सत्या श्रीवास्तव

मधुनिशा घोष
उम्र : 13 वर्ष,
कक्षा : 8,
प्रूडेंस स्कूल, द्वारका,
दिल्ली

3rd

सत्या श्रीवास्तव
उम्र : 11
कक्षा : 6
डी.ए.वी पब्लिक स्कूल
झारसुगुड़ा

खुशियों की चाबी

यह कहानी गांव धुराना में रहने वाले एक सामान्य से परिवार की है। घर का मुखिया अध्यापक था। उसके दो बेटे थ, मोहन और प्रणव।

एक दिन दोनों भाई स्कूल से आकर अपने ताऊ की लड़की प्रियंका के पास पढ़ने के लिए गए हुए थे। उनके पिताजी स्कूल से घर आए और पूछा तो मां ने बता दिया। थोड़ी देर में बच्चे भी घर आ गए। दोनों बच्चों ने नमस्ते करके होमवर्क चेक करने के लिए अपनी अपनी कॉपियां पिताजी के सामने रख दी। फिर कुछ देर बाद बच्चे मां से पूछकर खेलने की लिए बाहर की ओर निकलते ही लगे कि उनके पिताजी ने पूछा, "बच्चो! तुम्हारे पेपर कब हैं?"

बच्चे बोले, "पिताजी, अगले महीने की चार तारीख को हैं।"

पिताजी ने प्यार से कहा, "जो अबकी बार परीक्षाओं में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त करेगा उसे मनचाही चीज दिलाऊंगा।"

बच्चे उत्साहित होकर उछले और बोले, "पिताजी! हमें लाल रंग की साइकिल चाहिए।"

बच्चों को मानो खुशियों की चाबी मिल गई। पापा और बच्चों ने एक दूसरे से वादा किया और वे खुशी से भरे खेलने चले गए।

फिर अगले महीने पेपर शुरू हो गए। बच्चों ने अपनी पूरी ताकत लगाकर पेपर दिया। दस-बारह दिनों में पेपर समाप्त हो गए।

पंद्रह दिन बाद परिणाम आया। प्रणव सत्तान्वे प्रतिशत अंक प्राप्त किया तो मोहन ने तिरासी प्रतिशत।

उस दिन उनके पिताजी घर पर ही थे। प्रणव खुशी में उछलता हुआ बोला, "पिताजी! मैंने सत्तान्वे प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं।"

मोहन उदास होकर चुपचाप बैठा रहा, तो पिताजी ने मोहन से पूछा। मोहन उदासी भरे स्वर में बोला, "पिताजी, मेरे तो केवल तिरासी प्रतिशत अंक आए हैं। पर मैं वादा करता हैं, अगली बार इससे ज्यादा अंक लूंगा।"

पिताजी ने प्यार से पूछा, "पर बेटा, यह सब कैसे हुआ?"

मोहन ने दुखी मन से कहा, "पिताजी, मैंने तो अपनी सौ प्रतिशत ताकत लगा दी थी।"

दोनों बच्चों को अपने पास बैठाकर पिताजी बोले, "बहुत अच्छा। बेटा, महत्वपूर्ण यह नहीं कि आपको सौ प्रतिशत अंक मिलें बल्कि महत्वपूर्ण यह है कि आपने उन्हें प्राप्त करने के लिए अपना सौ प्रतिशत प्रयास किया।"

बच्चों कुछ उदास थे कि साइकिल नहीं मिलेगी। पर पिता तो बहुत महान होते हैं। उन्होंने बच्चों की भावनाओं को देखा, समझा और अगले दिन बच्चों के लिए वादे के अनुसार साइकिल दिलवा लाए ।

अपनी खुशियों की चाबी यानी मनपसंद लाल रंग की साइकिल पाकर बच्चे कमल की तरह खिल गए।

यश

यश,
उम्र : 12 वर्ष,
कक्षा : सात,
रेनबो मोंटेसरी स्कूल,
हाबड़ी, कैथल

खाना और पकाना

किसी जमाने में...

पहले घर बनाते समय रसोईघर कुछ कोने में बनाया जाता था ताकि खाना बनते समय चूल्हे से निकलने वाले धुएं से लोग बच सकें। महिलाएं मिट्टी के चूल्हों में फूंक-मार-मारकर बेदम हो जाती थीं। वायु प्रदूषण तो होता ही था, महिलाओं की आंखों में तकलीफ भी हो जाती थी। अधिकतर महिलाएं किसी न किसी बीमारी की चपेट में आ जाती थीं

माइक्रोवेव का आविष्कार

1946 में राडार से जुड़ी खोज के दौरान वैक्यूम ट्यूब (मैगनेट्रॉन) पर परीक्षण कर रहे थे। इसी दौरान डा. पर्सी स्पेंसर ने देखा कि उनकी जेब में रखी टॉफी पिघल गई है। चकित स्पेंसर ने भुट्टे के दानों को ट्यूब के पास रखकर देखा, तो वे भी फूट गए। बस, आगे इसी दिशा में प्रयोग करके डा. स्पेंसर ने माइक्रोवेव ओवन बना डाला।

अब के समय में...

पर अब खाना चाहिए, तो कोशिश होती है कि रसोईघर डाइनिंग हॉल के साथ हो ताकि गरमागरम खाना परोसने में आराम हो। अब गैस से भी आगे माइक्रोवेव व एयर फ्रायर का जमाना है। इधर खाना डाला और उधर झट से तैयार। बिजली से बनने के कारण धुएं का कोई नामोनिशान नहीं।

पुस्तक परिचय

पुस्तक : हवा का इंतजाम
लेखक : गोविंद शर्मा
प्रकाशक : सहित्यागार, जयपुर
फोन : 0141-2310785
ईमेल : sahityagar@gmail.com
मूल्य : 200 रुपए

17 कहानियों का यह गुलदस्ता तरह-तरह के फूलों यानी कहानियों से सुशोभित है। कहानियां इतनी सरल कि सीधे दिल में उतर जाएं। गोविंद जी के अंदर का बच्चा सभी कहानियों में मुखर होकर बाहर आ गया है।

पुस्तक में शीर्षक कहानी 'हवा का इंतजाम' एक पोते का दादा के प्रति प्यार को दर्शाते हुए मन को भिगो देता है। 'वनराज और गजराज' में घमंड में आ रहे वनराज को गजराज बड़ी होशियारी से सीधा करते हैं।

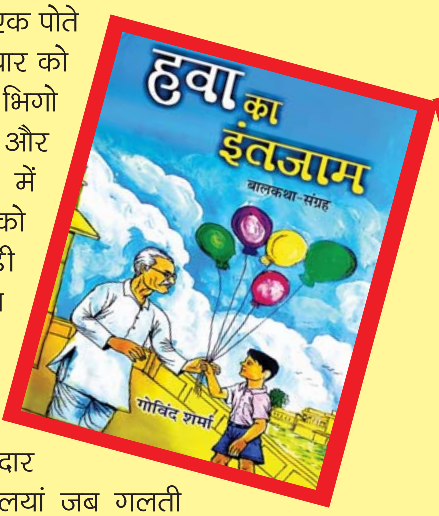

ऐसे ही 'चिम्पू के सच्चे दोस्त' कहानी बड़ी मजेदार है। चिम्पू की बिल्लियां जब गलती करती हैं तो सिर झुकाकर माफी भी मांगती हैं, लेकिन गलत इल्जाम लगने पर प्रतिकार भी करती हैं।

'हौसले की उड़ान' ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जो पानी की किल्लत से जूझते गांव में स्कूल के बच्चों के लिए पानी लाने के लिए एक बैल के मर जाने दूसरे बैल के साथ खुद को जोत देता है। 'बुद्धि की तलाश' मजेदार कहानी है। अकबर-बीरबल की कहानी को नया ट्विस्ट देकर मजेदार बना दिया गया है। 'दोस्ती' कहानी में कुत्ते अपने मालिक को दोस्ती का पाठ पढ़ा देते हैं।

'बदल गया बदलू' कहानी पर्यावरण के प्रति हमें सचेत करती है। 'जूते' कहानी यह समझाने में सफल है कि दान या सहायता भी करो तो ऐसे कि सामने वाले को बुरा न लगे।

इस तरह सरल भाषा में सरल कहानियां रचना गोविंद शर्मा जी की खासियत है और यह खासियत इस संकलन में भी उभरकर आई है।

पुस्तक : पेड़ और बादल
लेखक : गोविंद शर्मा
प्रकाशक : सहित्यागार, जयपुर
फोन : 0141-2310785
ईमेल : sahityagar@gmail.com
मूल्य : 200 रुपए

इस पुस्तक की खासियत यह है कि कहीं कोई उपदेश नहीं है, फिर भी सभी कहानियां पर्यावरण और जल संरक्षण की ओर ध्यान दिलाकर उसे बचाने के साथ साथ धरती को बचाने की बात बड़े ढके-छुपे ढंग से समझा जाती हैं।

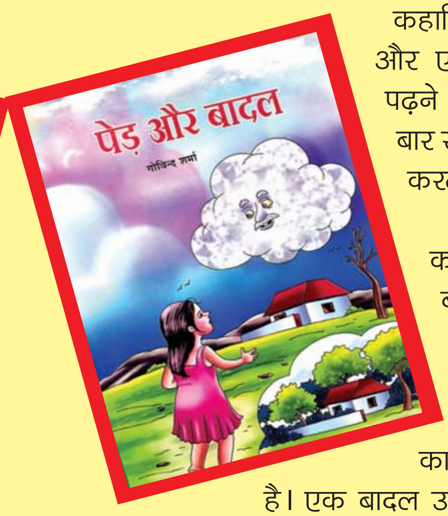

कहानियां कुल दस हैं और एक-एक कहानी पढ़ने के बाद दस-दस बार सोचने पर मजबूर करती है।

पहली प्रतिनिधि कहानी 'पेड़ और बादल' एक बच्ची की कहानी है, जो सूखे के दौरान बादल का इंतजार करती है। एक बादल उससे वादा करता है कि वह एक महीने बाद उसके घर पर खूब बरसेगा। पर बादल उसके घर बरसता नहीं। कारण, पैसे की जरूरत पड़ने उसके पिता ने सारे पेड़ कटवा दिए थे। संदेश है, पेड़ नहीं तो पानी नहीं।

ऐसे ही एक पोता अपने दादा को 'जल कंजूस' कहता है क्योंकि वह हर समय जल बचाते रहते हैं। पर अपने टीचर के समझाने पर उसकी समझ में आता है कि पानी कितना कीमती है। 'नीम का बीज' कहानी यह बताती है कि विनाश के साधनों का तो हम बहुत जल्दी आविष्कार कर लेते हैं परंतु विकास का साधन आविष्कार करने में हम कंजूसी बरत लेते हैं।

'जल चोर' एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो लोगों के घर से फालतू बहता जल अपने लिए इस्तेमाल करता है

कहानियों की भाषा सरल और सहज है, जो हर आयु वर्ग के बच्चों को भाएगी। बड़े अक्षरों में छपी कहानियां पढ़ने में किसी को परेशानी नहीं होगी।

पुस्तक : पत्र तुम्हारे लिए
संपादक : डॉ. विमला भंडारी
प्रकाशक : ग्रंथ विकास, जयपुर
फोन : 0141 2310785
ईमेल : sahityagar@gmail.com
मूल्य : 250 रुपए

पत्र लेखन व्यवहार से निकलता ही जा रहा है, विधा के रूप में भी हटते-हटते हाशिये तक आ गया है। ऐसे समय में इस विधा को पुनर्स्थापित करने का यह प्रयास सराहनीय व अनुकरणीय है। इस पुस्तक में सैंतीस प्रतिभागी साहित्यकारों के सैंतीस ही पत्र संकलित हैं।

संकलित पत्रों के विषय, संबोधन, संदर्भ अलग-मिजाज और अलग शैली में हैं, जिसके फलस्वरूप पुस्तक एक ऐसी वाटिका जैसी विकसित हुई है, जिसमें विविध रंग व सुगंध के सुमन अपनी छटा विखेर रहे हैं। पुस्तक में स्थापित व नवोदित साहित्यकारों को समान महत्व देते हुए उनके पत्रों को ससम्मान यथोचित स्थान दिया गया है। पत्रों का उद्देश्य भी मात्र औपचारिक नहीं, बल्कि जिन्हें भी लिखा गया है, उनके हित की बात, या कोई नवीन जानकारी अथवा आत्मीय संवाद स्थापित करने में सफल हुए हैं।

मैं विश्वास सहित कह सकता हूं कि पहला पत्र पढ़ने के बाद पाठक अंतिम पत्र तक पहुंचने के लिए छटपटाता रहेगा। प्रत्येक पत्र के समापन के बाद पाठक को चिंतन मनन विमर्श के भरपूर अवसर मिले हैं। प्रत्येक पत्र की प्रतिक्रिया में एक आलेख आसानी से लिखा जा सकता है।

पुस्तक के समापन पर पाठक सहज ही संपादक डॉ. विमला भंडारी जी की इस बात से सहमति व्यक्त करेगा, 'इन पत्रों में प्यार-दुलार, अपनापन, विशिष्टता, दुनिया की ऊंच-नीच की समझ, ज्ञान-विज्ञान, आदत-व्यवहार, जीवन की उलझन सुलझाने की ताकत है।'

सचमुच ही बच्चों के लिए खट्टी-मीठी गोलियों के अनूठे स्वाद के साथ-साथ जीवन के हर मोड़ पर कुछ खास कुछ सीख-सबक, साहस, संबल देने की क्षमता रखते हैं ये सारे पत्र।

समीक्षक : राजेन्द्र श्रीवास्तव

पुस्तक : मनभावन शिशु कविताएं
कवि : संतोष कुमार सिंह
प्रकाशक : साहित्य संगम प्रकाशन, मथुरा
फोन : 9456882131
मूल्य : 80 रुपए

संतोष कुमार सिंह की नई पुस्तक 'मनभावन शिशु कविताएं' में मन को गुदगुदाने वाली 20 शिशु कविताएं संग्रहीत हैं। कविताओं के साथ आकर्षक चित्र भी हैं। पहली कविता 'मां' में एक बालक कहता है

अति का लाड़ लड़ाती माँ।
अच्छी बात सिखाती माँ।
गोद स्वर्ग से भी सुंदर,
इसमें हमें सुलाती माँ।

जानवरों की कविताएं बच्चों के मन को बहुत गुदगुदाती हैं। 'बंदर और हाथी' कविता बड़ी मजेदार है। बंदर हाथी को परेशान करता है। बार-बार हाथी के ऊपर चढ़ता, उतरता है। हाथी को गुस्सा आता है और उसे पकड़कर फेंक देता है

'समझाया था किंतु न माना,
उबाल आ गया खून में।
पकड़ सूँढ़ से ऐसा फेंका,
पहुँचा देहरादून में।'

कोरोना काल में जब लॉकडाउन था, उस समय भूख से व्याकुल एक गाय और गधा सड़क पर आ जाते हैं । तब कुछ सिपाही उनके पीछे पड़ जाते हैं ।

'बीच सड़क पर गधे लाल थे,
पीछे उसके गइया।
चार गधे के, चार गाय के,
पीछे पड़े सिपहिया।
गाय न पकड़ी गई दौड़कर,
झट बाड़े में आई।
गदहा पकड़ा गया, पुलिस ने,
बैठक-उठक कराई।'

इसी प्रकार गुदगुदाने वाली और ज्ञानवर्धक रचनाएं और भी हैं जिनमें 'केले के छिलके', 'मच्छर राजा', 'जलेबी', 'उल्लू' और 'कोयल राजा' पठनीय हैं। कुल मिलाकर यह पुस्तक शिशुओं के मनोरंजन के लिए बहुत ही अच्छी है।

बाल उपन्यास : हम चलेंगे साथ-साथ
रचनाकार : कामना सिंह
प्रकाशक : नमन प्रकाशन, दिल्ली
फोन नंबर : 9850551515
मूल्य : 200 रुपए

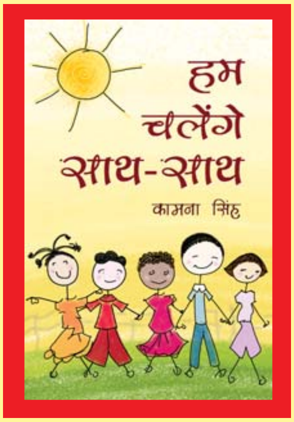

कोरोना-काल का बाल संसार : हम चलेंगे साथ-साथ

वैश्विक महामारी कोरोना पर हिंदी का पहला बाल उपन्यास है 'हम चलेंगे साथ-साथ'। कथा नायक है तेरह वर्ष का आर्यन, जो दिल्ली में अपने मम्मी-पापा के साथ रहता है। वह आठवीं कक्षा पास करके नवीं में पहुंचा है। चौबीस मार्च की रात को लॉकडाउन की घोषणा से परिवार की समस्याएं बढ़ गईं। 'वर्क फ्रॉम होम' के चलते मम्मी-पापा अपने-अपने ऑफिस के काम के साथ अलग-अलग कमरों में बंद हो चुके थे। ऊपर से काम वाली चित्रा आंटी के न आने से उन दोनों को घर भी संभालना पड़ा।

आर्यन की झल्लाहट बढ़ने लगी। सामाजिक दूरी, मास्क, सैनिटाइजर, साबुन से हाथ धोना और संक्रमण का भय, सभी बातें एकदम नई। स्कूल में ऑनलाइन पढ़ाई होने लगी। सिर्फ अपने मोबाइल और कंप्यूटर के साथ आर्यन कैसे और कितना खुश रहता? दोस्तों के साथ फोन पर भी कितनी बातें करता? कोई भाई-बहन भी नहीं था।

खैर, इस नीरस जिंदगी में बदलाव आया जब कामवाली चित्रा आंटी का बेटा सुहास कुछ दिनों के लिए उसके घर रहने आया। अब आर्यन को एक काम जरूर मिल गया था, सुहास की हंसी उड़ाना।

आर्यन चाहता था कि गरीब घर के सुहास की कोई गलती पकड़े और उसे मम्मी-पापा की नजरों से गिरा दे। संयोग से एक दिन ऐसा मौका मिल भी गया। किंतु उसके बाद ...

आर्यन और सुहास की इस कहानी में गरीबी-रेखा से नीचे रहने वाले बच्चे भी जुड़ जाते हैं, जो कोरोना-काल में आधा पेट भोजन भी नहीं पा रहे हैं। ऐसे में यह उपन्यास बच्चों को ज्यादा समझदार होने की बात बताता है। इसी के बीच बच्चों को जीना सीखना है, आगे बढ़ना सीखना है। आपदा में भी याद रखना है, 'हम चलेंगे साथ-साथ'। यही इस उपन्यास का संदेश है। रोचक कथानक, सरल भाषा, मनमोहक शैली और वर्णन में प्रवाह इस सुंदर बाल उपन्यास की विशेषताएं हैं। बच्चों को यह निश्चित रूप से भाएगा और रास्ता दिखाएगा।

समीक्षक : उषा यादव

पुस्तक : राधा की क्यारी
लेखक : सिराज अहमद
प्रकाशक : अकादमिक बुक्स इंडिया
फोन : 9910583406, 9873977321
ईमेल : academicbooks101@gmail.com
मूल्य : 215 रुपए

25 कहानियों का संग्रह है, 'राधा की क्यारी'। पुस्तक का आकार व मोटाई देखकर किसी बाल उपन्यास का भ्रम होता है। परंतु खोलो, तो कहानियां निकलती हैं, वह भी एक से बढ़कर एक।

प्रथम कहानी ही संकेत दे देती है कि कहानियां बाल मन को ध्यान रखकर रची गई हैं, उनमें संदेश साधने या ढूंढ़ने का प्रयास न करें। समां बंधने की शुरुआत होती है, दूसरी कहानी 'अम्मी नाराज नहीं हैं' से। खेल-खेल में बच्चा अपनी अम्मा के टेप रेकार्डर को बर्बाद कर देता है। अम्मी नाराज होती हैं, पर वह हैं तो अम्मी हीं। रात होते-होते अम्मी नाराजगी छोड़, पुरानी अम्मी बन जाती हैं।

मां का ऐसा ही प्यारा रूप अगली कहानी 'असलम का पठानी सूट' में देखने को मिलता है। दर्जी के न सिलने पर खुद अम्मी पूरी रात बैठकर ईद पर पहनने के लिए बेटे के लिए मनपसंद पठानी सूट सिलती हैं।

इसी तरह 'राधी की क्यारी' ऐसी मासूम बच्ची की कहानी है, जिसकी क्यारी बरसात में खराब हो जाती है। फिर घर वाले मिलकर उसकी क्यारी को संवारते हैं। 'लौट आई खुशी' कहानी एक बकरे और बच्ची की है जिनमें स्नेह का बंधन जुड़ जाता है। बच्ची से अलग करने पर बकरा खाना पीना छोड़ देता है।

इस तरह आप पढ़ते जाइए, एक से बढ़कर एक कहानियां आपके सामने आती जाएंगी।

सिराज की कहानियों में एक रवानगी है। शैली बच्चों के अनुरूप है। भाषा सरल और सहज है, जिसे बच्चे आसानी से ग्रहण कर सकते हैं।

समीक्षक : अनिल जायसवाल

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। एक अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता, पर सबके सहयोग से अपनी बात लोगों तक मजबूती से जरूर रख सकता है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। चाहे वरिष्ठ हों अथवा युवा साथी, सभी ने यथासंभव सहयोग दिया। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. पंकज चतुर्वेदी
2. राम करन
3. मनोहर चमोली 'मन'
4. डॉ. अनुपमा गुप्ता
5. रेनू मंडल
6. मोहम्मद अरशद खान
7. मोनिका अग्रवाल
8. मेराज रजा
9. पवन चौहान
10. भगवत प्रसाद पाण्डेय
11. रावेंद्रकुमार रवि
12. देवेंद्र कुमार
13. हरिओम जायसवाल
14. डॉ. शील कौशिक
15. भास्वर लोचन
16. उषा सोमानी
17. समीर गांगुली
18. दीप्ति मित्तल
19. संगीता सेठी
21. प्रभा खन्ना
20. अनिल जायसवाल

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

FOR PAYTM
Mobile number **7982014609**
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**

ऑनलाइन मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

FOR PAYTM
Mobile number **7982014609**
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**